केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 34

अक्टूबर–दिसंबर, 2022

G20 भारत 2023

केनरा ai
बैंकिंग सुपर ऐप

आज़ादी का अमृत महोत्सव

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking
सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

दिनांक 07.02.2023 को श्री के. सत्यनारायण राजु ने केनरा बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में पदभार गहण किया

श्री के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक
व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

श्री अशोक चन्द्र
कार्यपालक निदेशक

श्री शंकर एस.
मुख्य महाप्रबंधक

श्री जी. एस. रविसुधाकर
महाप्रबंधक

श्री ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

संपादक
श्री राघवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक

संपादन सहयोग
श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री डी. बालकृष्ण, वरिष्ठ प्रबंधक
सुश्री अंकिता कुमारी, परि.अधिकारी

बिक्री के लिए नहीं
प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 9075
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश	02
मुख्य संपादक का संदेश	03
द राइज़ ऑफ यूपीआई	04
ब्लॉकचेन विकास	06
ग्रामीण भारत से डिजिटल भारत	08
डिजिटल बैंकिंग इकाई	11
डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में क्रांति	13
भारत में एमएसएमई क्षेत्र	16
नव वर्ष | ना निराश हो...	19
बसंत पंचमी	20
निर्णय	22
कर्नाटक के मलनाड क्षेत्र की यात्रा	25
तमिलनाडु में राजभाषा हिंदी	27
खट्टा मीठा रिश्ता | मेरी उड़ान	29
हिंदी के सुयोग्य विद्वान फादर कामिल बुल्के	30
एक होना है..... कुछ कर दिखाना है	32
मैं कौन हूँ?	34
मिट्टी से जुड़ी जड़ | साहस से सफलता	36
एक छोटी सी मरम्मत	37
आचार विचार	38
ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला	40
आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर बेंगलूरु की यात्रा	41
समय चक्र	43
लड़ाई अपने अंतर्द्वंद से	44

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स !

केनरा बैंक की प्रतिष्ठित हिंदी गृह पत्रिका केनरा ज्योति के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करने का अवसर मिल रहा है। मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि हम केनरा ज्योति के 34 वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस संगठन का नेतृत्व करने के लिए मुझ पर किए गए भरोसे से मैं अभिभूत हूँ और मैं इस जिम्मेदारी को बहुत गंभीरता से लेता हूँ। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, मैं इस संस्था के भविष्य को आकार देने के लिए आप सभी के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हूँ। मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता सहयोग की संस्कृति का निर्माण करना होगा, जहां सभी कर्मचारी बैंक की प्रगति में योगदान देकर गौरवान्वित महसूस करें।

किसी भी संस्था की उन्नति का मूल आधार उनके ग्राहक होते हैं। आज ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुरुप सेवाएं प्रदान करना बहुत जरुरी है। आज के डिजिटल दौर में ग्राहक सेवा का स्वरुप भी बदल रहा है। बैंक द्वारा ऑनलाइन खाता खोलने से लेकर ऑनलाइन ऋण देने की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। एम.एस.एम.ई, रिटेल क्रेडिट और कासा के स्तर में संवर्धन करते हुए हमें नए लक्ष्यों का निर्धारण करना है। कासा में बढ़ोतरी से लाभप्रदता को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

यह हर्ष और गौरव की बात है कि G-20 के आगामी शिखर सम्मेलन की मेजबानी का दायित्व हमारे देश को सौंपा गया है। G-20 दुनिया की बीस सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का समूह है, जिनकी विश्व की जीडीपी में 85% से अधिक की भागीदारी है। इसके अंतर्गत अमेरिका, यू.के., आस्ट्रेलिया और जापान जैसे कई विकसित देश शामिल हैं। इसकी थीम **वसुधैव कुटुंबकम** एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य रखा गया है। यह निश्चित तौर पर वैश्विक मंच पर भारत के बढ़ते महत्व को दर्शाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

हिंदी भाषा के माध्यम से हम अधिक से अधिक ग्राहकों से जुड़ सकते हैं और अपने बैंक के कारोबार में वृद्धि कर सकते हैं। सभी शाखाओं/ कार्यालयों से आग्रह है कि वे अपने-अपने कार्यालय में सरल हिंदी के प्रयोग के लिए अनुकूल एवं उत्साहवर्धक वातावरण का निर्माण करें जिससे सभी अधिकारी/कर्मचारी टिप्पणियां, मसौदे, पत्राचार मूल रुप से सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित हो और यह पत्रिका कर्मचारियों के कला कौशल में अभिवृद्धि के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के विकास का मार्ग प्रशस्त करने का एक माध्यम बने। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी इसी तरह राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए अपने कार्यालय एवं बैंक की गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' का मान बढ़ाते रहेंगे।

आइए हम सब मिलकर इस संस्था को आने वाले वर्षों में और भी मजबूत और अधिक सफल बनाने का प्रयास करें।

के. एस. राजु

के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय साथियों,

केनरा ज्योति के 34वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत उत्साहित हूँ। इस बार का अंक मुझे इस मायने में खास लग रहा है कि इस बार नए-नए बैंकिंग विषयों पर हमें रचनाएं प्राप्त हुई हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि हम अपनी बात को आप तक पहुँचाने में सफल हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि हमें आगे भी इसी प्रकार के लेख प्राप्त होते रहेंगे,पत्रिका का यह अंक आप सभी को अवश्य पसंद आएगा।

राजभाषा का प्रचार-प्रसार करना हमारा दायित्व है। भारत सरकार द्वारा भी समय-समय पर सरल एवं सहज हिंदी के प्रयोग के लिए दिशानिर्देश जारी किए जाते हैं। हम भारत सरकार की राजभाषा नीति व नियमों का पूर्णत: अनुपालन सुनिश्चित करते हुए बैंकिंग के सभी क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार करते रहेंगे। हिंदी संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को जागृत करती है। यह एक ऐसी भाषा है जिसकी अपनी मानक शब्दावली, व्याकरण और शैली है। देश की संपर्क भाषा के रुप में हिंदी में समरसता है जिसके कारण आम जन इससे आसानी से जुड़ जाते है। बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी की महत्ता को अगर देखें तो हम यह महसूस करेंगे कि हिंदी अंतिम ग्राहकों तक बैंकिंग सुविधाओं और सेवाओं को पहुंचाने में न केवल सरल और सुगम मार्ग प्रशस्त करती है बल्कि उपभोक्ताओं के विश्वास को जीतने में सहायता प्रदान करती है।

हमारे कई अंचल कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरुप उन्हें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा पुरस्कृत भी किया जाता है। हम यह आशा करते हैं कि अन्य अंचल भी अपने-अपने कार्यस्थल पर हिंदी के प्रयोग से अपने अंचल कार्यालय/ क्षेत्रीय कार्यालय को एक अलग पहचान दिलाने में अपना पूरा योगदान देंगे। आज हिंदी में काम करना बहुत ही सरल हो गया है। तकनीकी प्रयोग ने इसे इतना सरल बना दिया है कि आज आप 'स्पीच टू टेक्स्ट' एप्लिकेशन के माध्यम से बिना टाइप किए भी पूरा का पूरा पत्र लिख सकते हैं।

मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूँ और यह आशा करता हूँ कि आपका मार्गदर्शन, स्नेह और प्रोत्साहन इस पत्रिका को आगे भी मिलता रहेगा।

ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

आलेख

द राइज़ ऑफ यूपीआई

अमित सिंह
अधिकारी
अंचल कार्यालय, भोपाल

यूपीआई है क्या ?

यूपीआई एक रियलटाइम पेमेंट सिस्टम है जिसे भारत सरकार के उपक्रम एनपीसीआई द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक तथा आईबीए के सहयोग से विकसित किया गया है।

यूपीआई काम कैसे करता है

यूपीआई की सेवा लेने के लिए आपको वर्चुअल पेमेंट ऐड्रेस तैयार करना होता है । इसके बाद आपको इसको अपने बैंक खाते से लिंक करना होता है, फिर वीपीए आपका वित्तीय पता बन जाता है। आपको बैंक का नाम एवं आईएफएससी कोड याद रखने की जरूरत नहीं पड़ती। पेमेंट करने वाला बस आपका वीपीए आईडी डालता है और रिक्वेस्ट प्रोसेस करता है भुगतान आपके खाते में आ जाता है।

यूपीआई की जरूरत क्यों पड़ी

यूपीआई के आने के पहले हमारे देश में डिजिटल लेनदेन ना के बराबर होते थे। हालांकि कार्ड बेस सिस्टम एवं नेट बैंकिंग सेवा हमारे देश में पहले से उपलब्ध थी। भा.रि.बैंक के आंकड़ों के अनुसार साल 2011 में भारत का हर एक व्यक्ति सिर्फ 6 नगदरहित ट्रांजेक्शन किया करता था जबकि एक करोड़ रिटेलर पेमेंट स्वीकार करते थे। ज्यादातर लोग नगद में ही भुगतान लिया करते थे।

यूपीआई कार्ड सिस्टम नेट बैंकिंग से अलग कैसे

यूपीआई से लेनदेन करना बहुत आसान एवं कम समय में हो जाता है जबकि कार्ड ट्रांजेक्शन एवं नेट बैंकिंग में अधिक समय लगता है। यूपीआई सुरक्षित होने के साथ-साथ फ्री भी है, जबकि कार्ड ट्रांजेक्शन एवं नेट बैंकिंग से लेनदेन करने पर शुल्क लगता है ।

यूपीआई का सफर

11 अप्रैल 2016 को तत्कालीन भा.रि.बैंक गवर्नर डॉ. रघुराम राजन ने यूपीआई को लॉन्च किया। यूपीआई के लॉन्च का मुख्य उद्देश्य डिजिटल लेनदेन को बढ़ाना तथा नगद लेनदेन को कम करना था। नवंबर 2016 में हुई नोटबंदी से डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा मिला और देश में सस्ती इंटरनेट सेवाओं से इसके यूजर भी बढ़ने लगे तथा यूपीआई का इस्तेमाल करने लगे। फिर 2020 में कोविड-19 की वजह से यूपीआई यूजर बहुत तेजी से बढ़े और लेनदेन का वॉल्यूम भी बहुत बढ़ गया। यूपीआई की सफलता को देखकर गूगल ने अमेरिकी सरकार को यूपीआई जैसा सिस्टम अमेरिका में लाने की सलाह दी।

अभी, देश में लगभग 26 करोड़ यूपीआई यूजर हैं एवं लगभग 5 करोड़ मर्चेंट हैं एवं हर सेकंड 10,000 से ज्यादा यूपीआई लेनदेन हमारे देश में होते हैं। हर दिन लगभग 20 करोड़ से ज्यादा लेनदेन होते हैं तथा हर महीने लगभग 10 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का लेनदेन होता है। एनपीसीआई इसे प्रतिदिन 100 करोड़ लेनदेन तक पहुंचाना चाहता है ।

यूपीआई का मार्केट शेयर

अभी सबसे ज्यादा मार्केट शेयर यूपीआई लेनदेन में फोन पे, गूगल पे एवं पेटीएम तीनों का मिलाकर 94 प्रतिशत है जबकि अन्य का केवल 6% है ।

क्या है यूपीआई 2.0

ग्लोबल फिनटेक फेसट सितंबर 2022 जो कि हाल ही में मुंबई में हुआ है, वहां भारत के भा.रि.बैंक गवर्नर श्री शक्तिकांत दास ने आने वाले यूपीआई के फीचर्स की घोषणा की जो कि निम्नानुसार हैं :

1. यूपीआई को क्रेडिट कार्ड से लिंक करना

यूपीआई के साथ अब हम लोग क्रेडिट कार्ड को लिंक कर पाएंगे यानी, अब हम लोग वह पैसा भी यूपीआई से भुगतान कर पाएंगे

जो हमारे खाते में नहीं है। फिलहाल यह सुविधा केवल रुपे कार्ड के लिए रहेगी बाद में वीजा एवं मास्टर कार्ड भी यूपीआई से लिंक कर पाएंगे। हालांकि एमडीआर चार्जेस जो कि क्रेडिट कार्ड पर 1 से 3 प्रतिशत तक लगता है उसको लेकर अभी कोई स्पष्टता नहीं है । लेकिन इससे छोटे व्यापारी को फायदा मिलेगा क्योंकि छोटे व्यापारी को पीओएस सेवा महंगी पड़ती थी, लेकिन यूपीआई से क्रेडिट कार्ड लिंक होने के बाद व्यापारी यूपीआई से भी भुगतान प्राप्त कर सकते हैं।

2. यूपीआई लाइट

अब बिना इंटरनेट के भी यूपीआई ट्रांजेक्शन किया जा सकता है। यह एक वॉलेट की तरह काम करेगा इसमें आप अधिकतम ₹2000 डाल सकते हैं। यूपीआई लाइट ट्रांजेक्शन की अधिकतम सीमा 200 रुपये है क्योंकि लगभग 50% यूपीआई लेनदेन ₹200 से कम के होते हैं। इसी को ध्यान में रखकर यह सुविधा बनाई गई है।

यह एक ऑन-डिवाइस वॉलेट सुविधा है जो यूजर्स को यूपीआई पिन का उपयोग किए बिना वास्तविक समय में छोटी राशि का पेमेंट करने की अनुमति देगा। यूपीआई लाइट को छोटे -छोटे राशियों के लेनदेन के लिए डिजाइन किया गया है।

3. भारत बिल – क्रॉस बार्डर बिल पेमेन्ट

यह भारत से बाहर रहने वाले लोगों के लिए बिल के भुगतान को आसान बनाने के लिए शुरू किया गया है। यह सुविधा विदेश में रह रहे लोगों को भारत में अपने घर के पानी, टेलीफोन और बिजली बिल सहित अन्य का भुगतान करने में मदद करेगी। शुरुआती चरण में संयुक्त अरब अमीरात के लुलु एक्सचेंज के साथ फेडरल बैंक, भारत बिल पे, सीमा पार बिल भुगतान सुविधा के साथ लाइव होने वाला पहला बैंक होगा। एनपीसीआई ने सिंगापुर की कंपनी पे नाउ, दुबई की कंपनी नियो पे एवं यूके की कंपनी पे एक्सपर्ट कंपनी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। यानी इन देशों में हम यूपीआई से भुगतान कर सकते हैं एवं फॉरेन रेमिटेंस प्राप्त कर सकते हैं। अब भुगतान करने के लिए स्विफ्ट सिस्टम पर निर्भरता कम हो सकती है ।

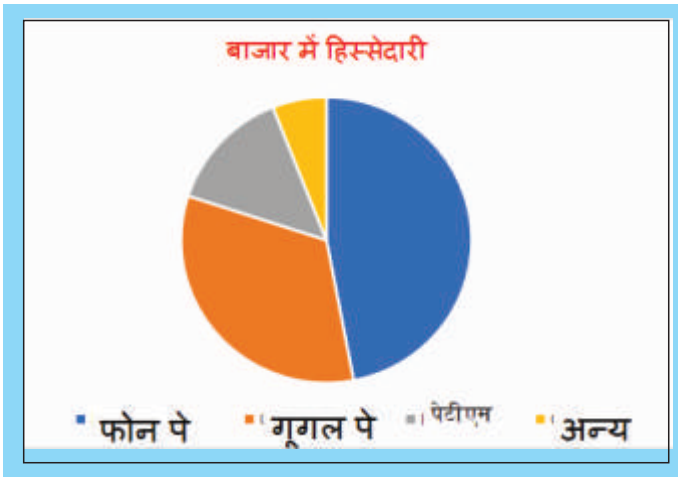

यूपीआई के लिये चुनौतियां

1. निशुल्क

फिलहाल यूपीआई सेवाएं फ्री में प्राप्त है, जिससे सरकार को यह खर्च उठाना पड़ रहा है, जैसे-जैसे और लेनदेन बढ़ता जाएगा सरकार पर खर्च का दबाव और बढ़ता जाएगा। अभी प्रश्न यह है कि सरकार यह सुविधा भविष्य में फ्री रख पाएगी या नहीं? यदि यह सेवाएं फ्री नहीं रहती है तो यूपीआई यूजर के कम होने का भी खतरा है।

2. फ्रॉड ट्रांजेक्शन

साल 2020-21 में लगभग 200 करोड़ रुपए के 69410 फ्रॉड ट्रांजेक्शन हुए हैं, इसमें से 50% यूपीआई फ्रॉड हुए हैं सरकार के लिए डिजिटल फ्रॉड कम करना भी एक बड़ी चुनौती है।

3. फिनटेक कंपनियों का एकाधिकार होना

अभी यूपीआई लेनदेन में फोन पे का शेयर 47% है एवं गूगल पे का 33% है । यूपीआई ट्रांजैक्शन में दोनों कंपनियों का डोमिनेंस है। सरकार नहीं चाहती है कि किसी भी कंपनी का मार्केट शेयर 30% से अधिक हो इसके लिए सरकार को कुछ नियम लाने होंगे।

इन चुनौतियों के बाद भी यूपीआई का उदय डिजिटलीकरण के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है तथा आगे आने वाले समय में भी इसका दबदबा बने रहने का अनुमान है ।

आलेख

ब्लॉकचेन विकास : बैंक में ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का बढ़ता महत्व

लीना ज्ञानवानी
परि. अधिकारी (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, मंडया

दुनिया भर के बैंकिंग संस्थानों ने मोबाइल बैंकिंग जैसे डिजिटलाइजेशन संचालित बिजनेस मॉडल की दिशा में कई कदम उठाए हैं। हालांकि, जब बैंकिंग में ब्लॉकचेन की बात आती है, तो प्रयासों को काफी हद तक धीमा कर दिया जाता है। बैंकों की झिझक उस महत्व के विपरीत है जो ब्लॉकचेन तकनीक अन्य उद्योगों में प्राप्त कर रही है। इसका एक संकेत इस तथ्य में देखा जा सकता है कि यह प्रौद्योगिकी 2022 में 10.9 बिलियन से बढ़कर 2026 तक 67.4 बिलियन से अधिक होने की ओर अग्रसर है।

बैंकिंग में ब्लॉकचेन

जब हम बैंक के दृष्टिकोण से देखते हैं, तो बैंकिंग और वित्त में ब्लॉकचेन उपयोग के बहुत कम मामले हैं जो बड़े पैमाने पर शुरू हुए हैं। निरंतर विनियामक बाधाएं भी हैं जो ब्लॉकचेन प्रवेश में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। इन चुनौतियों के बावजूद बैंकों ने छोटे पैमाने पर इस तकनीक को अपनाना शुरू कर दिया है।

आज की बैंकिंग प्रणाली में क्या समस्या है ?

बैंक सदियों से कई आर्थिक, वित्तीय गतिविधियों के लिए सूत्रधार के रूप में काम कर रहे हैं, जिसमें ऋण देना, व्यापार, लेन-देन निपटान, भुगतान प्रसंस्करण आदि शामिल हैं। अपने वर्तमान स्वरूप में, मांग के कारण यह उद्योग निरंतर गति से आगे बढ़ रहा है हालांकि अब भी बहुत अधिक कागजी कार्रवाई की आवश्यकता है, सुरक्षा कमजोरियों का सामना करना पड़ता है और कई समय लेने वाली प्रक्रियाएं होती हैं। बैंकिंग सिस्टम में किस तरह से बदलाव की आवश्यकता है, यह बैंकिंग उद्योग में ब्लॉकचेन अनुप्रयोगों से समझा जा सकता है।

बैंकिंग में विभिन्न ब्लॉकचेन उपयोग

बैंकिंग में ब्लॉकचेन का उपयोग कई प्रक्रियाओं में देखा जा सकता है।

1. भुगतान अंतरण

ईथर और बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी को सार्वजनिक ब्लॉकचेन पर विकसित किया गया है, जिसका उपयोग कोई भी बिना किसी लेनदेन शुल्क के और वास्तविक समय में पैसे भेजने और प्राप्त करने के लिए कर सकता है। इसके अलावा, चूंकि भुगतान एक विकेंद्रीकृत नेटवर्क पर होता है, लेनदेन को सत्यापित करने की कोई आवश्यकता नहीं है, जिससे बैंकिंग और वित्त में ब्लॉकचेन के माध्यम से भुगतान तेजी से और सस्ता हो जाता है ।

2. प्रतिभूति

ऋण, स्टॉक या वस्तुओं को खरीदने या बेचने के लिए, बैंकों को इस बात पर नज़र रखनी होती है कि किसके पास क्या है। इस जानकारी को प्राप्त करने के लिए, वे कई एक्सचेंजों, दलालों, समाशोधन गृहों और कस्टोडियन बैंकों आदि से जुड़ते हैं। बैंकिंग में ब्लॉकचेन तकनीक डिजिटल क्रांति लाती है। एक वितरित बहीखाता के माध्यम से, ऑफ-चेन संपत्ति का प्रतिनिधित्व करने वाले टोकन के माध्यम से संपत्ति को स्थानांतरित करना आसान हो जाता है जो बिचौलियों को पूरी तरह से हटाने और परिसंपत्ति विनिमय शुल्क को कम करने की क्षमता रखता है।

3. ऋण और क्रेडिट

जब किसी उपभोक्ता को ऋण के लिए आवेदन करना होता है, तो बैंक उस जोखिम का मूल्यांकन करते हैं जो भुगतान न करने की स्थिति में उन्हें भुगतना पड़ेगा। वे यह निर्णय क्रेडिट स्कोर, स्वामित्व की स्थिति और ऋण से आय अनुपात को देखकर लेते हैं। बैंकिंग में ब्लॉकचेन, एक वैकल्पिक उधार प्रणाली के साथ आता है जो ग्राहकों को व्यक्तिगत ऋण देने का एक कुशल, सस्ता और सुरक्षित तरीका प्रदान करता है। भुगतान की विकेंद्रीकृत रजिस्ट्री के साथ, उपभोक्ताओं के लिए ऋण का आवेदन करना आसान हो जाता है।

4. ग्राहक केवाईसी

बैंक, कई स्थितियों में सभी केवाईसी कार्यवाहियों को निष्पादित करने में महीनों तक का समय लेते हैं, जिसमें फोटो सत्यापन, पते के प्रमाण की जांच और बायोमेट्रिक्स सत्यापन शामिल हैं। ग्राहकों को सत्यापित करने में लगने वाले समय के अलावा, केवाईसी करने में भी बैंकों को काफी खर्च करना पड़ता है। रिटेल बैंकिंग में ब्लॉकचेन तकनीक केवाईसी प्रक्रिया को आसान बनाने में मदद करती है।

ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहे बैंकों का उदाहरण

प्रौद्योगिकी में रुचि दिखाने वाले बड़े बैंकों में ब्लॉकचेन तेजी से समर्थन प्राप्त कर रहा है।

जे.पी. मॉरगन : यह कंपनी धन अंतरण व भुगतान प्रसंस्करण और बड़े भुगतानों के लिए आवश्यक सत्यापन में समय को कम करने के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रही हैं।

स्वीडिश सेंट्रल बैंक : बैंक ई-क्रोना के रूप में जानी जाने वाली अपनी स्वयं की डिजिटल मुद्रा जारी करने के लिए ब्लॉकचेन प्रयोग कर रहा है। बैंक ने देश भर में प्रयोग करने योग्य क्रिप्टोकरेंसी के निर्माण की दिशा में एक साहसिक कदम उठाया है।

एचएसबीसी : बैंक डिजिटल वॉल्ट को सक्षम करने के लिए 3 ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म का एवं डिजिटल संपत्ति को स्टोर करने के लिए एक कस्टडी ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म का उपयोग कर रहा है। यह प्रौद्योगिकी उनकी सेवा की लागत को काफी हद तक कम करने में मदद करती है।

हमने बैंकिंग क्षेत्र में ब्लॉकचेन तकनीक की कई भूमिकाओं पर गौर किया। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि यह तकनीक कम लेन-देन लागत, त्वरित लेन-देन प्रसंस्करण और बेहतर डेटा सत्यापन के कई क्षेत्र में बहुत सारे नवाचार ला रही है।

व्यावसायिक नैतिकता क्या है और ये क्यों महत्वपूर्ण हैं?

हर उद्योग का अपना-अपना नैतिक आचरण होता है और यह तय करता है कि वो कंपनी ग्राहकों को कैसी सेवा दे रही है। कर्मचारियों का एक दूसरे के प्रति कैसा व्यवहार है और मालिक का कर्मचारियों की तरफ कैसा व्यवहार है। आप आसान भाषा में कह सकते हैं कि प्रत्येक उद्योग का अपना नैतिक आचरण होता है, जो कंपनी में हो रहे विभिन्न प्रक्रियाओं और प्रणालियों को प्रभावित करता है। व्यावसायिक उत्तरदायित्व नैतिकता उन प्रथाओं और नीतियों का समूह है जिनका उपयोग कंपनियां वित्त-बातचीत और सौदों, कॉर्पोरेट सामाजिक (corporate social responsibility), और अधिक के बारे में निर्णय लेने के लिए करती हैं। नैतिकता के एक मजबूत सेट के बिना, एक व्यवसाय कानून का उल्लंघन कर सकता है, वित्तीय नुकसान और नैतिक दुविधाओं का सामना कर सकता है। लेकिन अच्छी व्यावसायिक नैतिकता ग्राहकों, कर्मचारियों और अन्य हितधारकों को यह सुनिश्चित करती है कि एक कंपनी नियमों का पालन करती है और सही काम करती है।

आलेख

ग्रामीण भारत से डिजिटल भारत; भारत की प्रौद्योगिकी यात्रा

खुशियाँ चारों तरफ छाई हैं,
देखो सोने की चिड़ियां वाले देश में,
सालों बाद, सोने वाली लहर आई है ।।

– स्वर्णपदक भावना पवार

कुणाल कुमार पाठक
वरिष्ठ प्रबंधक व संकाय
सीएलडीसी, मुंबई

परिचय – ग्रामीण भारत; डिजिटल इंडिया

डिजिटल भारत (Digital India) एक ऐसी सोच है जो कि समूचे विश्व की विकसित देशों के सम्मुख भारत को खड़ा कर देगा। कहा जाता है कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है, इसलिए गाँव के विकास के बिना देश को विकास के पथ पर अग्रसर नहीं किया सकता है। ग्रामीण क्षेत्र, भारत में 'ग्रामीण इलाका' या 'गाँव' के रूप में जाना जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व बहुत कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के साथ-साथ मछली पकड़ना, कुटीर उद्योग, मिट्टी के बर्तन बनाना आदि आजीविका का मुख्य स्रोत है जिससे बेहतर रहन-सहन काफ़ी हद तक संभव नहीं है। इसलिए हमारे देश में आजीविका के लिए गाँवों से शहरों की ओर पलायन भी आम बात है।

डिजिटल इंडिया की शुरुआत – डिजिटल इंडिया का उद्देश्य

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम, डिजिटलरूप से सशक्त समाज और अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए रूपायित किया गया कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और अर्थव्यवस्था में परिणत करना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डिजिटल इंडिया प्रोजेक्ट की शुरुआत दिनांक 01 जुलाई 2015 को की थी। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का सबसे अहम उद्देश्य तकनीक के माध्यम से आम लोगों का जीवन सरल बनाना है। डिजिटल इंडिया योजना के जरिए देश के डिजिटल बुनियादी सिस्टम को सुधारना भी इसका उद्देश्य है। डिजिटल इंडिया योजना ने एक ऐसे इकोसिस्टम का निर्माण किया है, जिसने सभी मंत्रालयों और सरकारी विभाग को एक साथ डिजिटली रूप से जोड़ा है।

डिजिटल इंडिया का विजन

डिजिटल इंडिया के विजन को हम निम्नानुसार रेखित कर सकते हैं ।

- सशक्तिकरण
- शासन
- आधारभूत संरचना

डिजिटल इंडिया मिशन (अभियान)

डिजिटल इंडिया मिशन के कुल 9 स्तंभ हैं जो निम्नवत हैं :

1 ब्रॉडबैंड हाइवे – सड़क हाइवे की तर्ज़ पर ब्रॉडबैंड हाइवे से शहरों को जोड़ा जाएगा।

2 सभी नागरिकों की टेलीफ़ोन सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित की जाएगी।

3 सार्वजनिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम जिसके तहत इंटरनेट सेवाएं मुहैया कराई जाएंगी।

4 ई-गवर्नेंस – इसके अंतर्गत तकनीक के माध्यम से शासन प्रशासन में सुधार लाया जा रहा है ।

5 ई-क्रांति – इसके तहत विभिन्न सेवाओं को इलेक्ट्रॉनिक रूप में लोगों को मुहैया कराया जाएगा।

6 इंफ़ोर्मेशन फ़ॉर ऑल यानी सभी को जानकारियां मुहैया कराई जाएंगी।

7 इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन – सरकार का लक्ष्य भारत में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के लिए कल-पूर्जों के आयात को शून्य करना है।

8 आईटी फ़ॉर जॉब्स यानी सूचना प्राद्योगिकी के ज़रिए अधिक नौकरियां पैदा की जाएंगी।

9 अर्ली हार्वेस्ट प्रोग्राम – इसका संबंध स्कूल-कॉलेजों में विद्यार्थियों और शिक्षकों की हाज़िरी से है।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य विकास के लिए आवश्यक नौ स्तम्भों, अर्थात ब्रॉडबैंड हाइवे, मोबाइल कनेक्टिविटी के लिए यूनिवर्सल एक्सेस, सार्वजनिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम, ई-शासन: प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार, ई-क्रांति – सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलिवरी, सभी के लिए सूचना, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण आदि सुनिश्चित करना है ।

लोगों में शंका

हालांकि सरकार के इन मनसूबों को जारी किए जाने के बाद काफ़ी लोगों ने शंकाएं प्रकट की हैं। विक्रम सक्सेना ने ट्वीट किया, 'इससे किसानों को कैसे मदद मिलेगी? क्या वो डिजिटल इंडिया का मतलब भी समझते हैं?'अनुपम साराफ़ ने ट्वीट किया, 'क्या ज़बरदस्त शुरुआत है, इंटरनेट को बर्बाद करके अच्छी शुरुआत की है।' वहीं शंभू भारती ने लिखा है, 'अब बनेगा भारत महान।' सुबोध प्रभु ने कहा, 'लेकिन बीएसएनएल ने तो मुझे लैंडलाइन और इंटरनेट देने से इनकार कर दिया है।

डिजिटल इंडिया होने से लाभ और हानि

यह तो विदित है कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। आगे हम देखेंगे डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के लाभ। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के कई लाभ हैं जिससे सभी वर्ग के लोगों को अपने-अपने स्तर पर कुछ लाभ मिले।

समय की बचत

डिजिटल होने से समय की बचत में काफी सुधार आया है। लोगों को नगदी संभालना ले-जाना संभव नहीं होता और कभी कभी जोखिम भरा भी होता है। एटीएम के लाइन में खड़े होना पैसा निकाल के उसका भुगतान करना मुश्किल भरा होता है। इसीलिए इन सब गतविधियों से बचने के लिए डिजिटल ट्रांजेक्शन एक आसान उपाय प्रदान करता है।

भ्रष्टाचार की कमी

कैशलेस की वजह से रिश्वत लेन-देन में काफी कमी आयी है, इससे भ्रष्टाचार कम हुआ। डिजिटल ट्रांजेक्शन के वजह से हर एक एंट्री के रिकॉर्ड की वजह से छोटा भ्रष्टाचार करना भी मुश्किल हो गया है।

आसान लेन-देन (ट्रांजेक्शन)

किसी भी वस्तु को खरीदने या पैसों को वापस लौटने के लिए कैश का होना जरुरी होता है और कभी कभी खुले पैसे मिल पाना भी कष्टदायी होता है। डिजिटल ट्रांजेक्शन UPI की मदद से किसी को भी कभी भी रुपयों लेन-देन किया जा सकता है और रुपयों को खुले करने की भी आवश्यकता नहीं है।

इंटरनेट के एक्सेस से भारत के गावों – खेड़ों में कंप्यूटर के माध्यम से काफी जगह पर पैसों को ट्रांजेक्शन करना, ऑनलाइन फॉर्म भरना या ऑनलाइन बुकिंग करने जैसे कार्यों में बड़ी वृद्धि आयी और साथ ही ई-शिक्षा पर भी काफी तरक़्क़ी हुई। उसी तरह लोगों की उसके प्रति दिलचस्पी की वजह से ग्रामीण विभागों में मनोरंजन क्षेत्र में भी बढ़ोतरी देखने को मिली। शहरी विभागों में लोगों को रेलवे टिकट, मूवी टिकट, शॉपिंग, फूड आर्डर, किराना आर्डर, मनोरंजन जैसे अनेक क्षेत्रों का लाभ उठाना आसान हुआ।

शिक्षा का प्रसार

डिजिटल माध्यमों से बच्चे-बच्चे तक ज्ञान का प्रसार हुआ है। अब किसी को किसी चीज के बारे में जानने के लिए इंटरनेट से सभी जानकारियां प्राप्त हो जाती हैं। पहले शिक्षा को 'कक्षा शिक्षा' के रूप में जाना जाता था पर अब एप्लिकेशन से चलते-फिरते शिक्षा प्रदान हो रही है। डिजिटल इंडिया के कारण अब शिक्षा की कोई सीमा नहीं है। लेकिन डिजिटल इंडिया के संबंध में शिक्षा में कुछ कमी है। अनिवार्य 75% उपस्थिति जैसे कुछ निरर्थक कानूनों का यहाँ पर कोई समाधान नहीं है, इसके लिए लाइव और रिकॉर्डिंग के माध्यम से शिक्षा के साथ प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता है।

नई नौकरियों का सृजन

डिजिटल इंडिया के चलते बाजारों में आईटी विशेषज्ञों, कंप्यूटर इंजीनियरों की मांग बढ़ी है। नई टेक्नोलॉजी के आने से साइबर क्राइम के चलते साइबर और फोरेंसिक विशेषज्ञों, साइबर वकील की मांग बढ़ी है। भारत में टेक्नोलॉजी और डिजिटल के माध्यम से काम होने के कारण नए लोगों को इस क्षेत्र में अवसर मिलने लगे है।

सरकारी सेवाओं का ऑनलाइन होना

सरकारी कामों को मोबाइल और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में कार्य करना आसान हो गया है। विभागों या क्षेत्राधिकारों को एकीकृत करके प्रत्येक व्यक्ति के सिंगल विंडो का एक्सेस दिया गया है। सभी सरकारी दस्तावेज़ क्लाउड पर उपलब्ध हो गए ।

राजस्व (Revenue) में वृद्धि

लेन-देन के डिजिटलीकरण से ग्राहकों को उनके किये गए खरीदारी के लिए बिल मिलने लगा। टैक्स देने से बचने का मार्ग कम हो गया। इस प्रकार देश की समग्र वित्तीय स्थिति में वृद्धि होने लगी है।

लोगों का सशक्तिकरण

सरकार सब्सिडी को लोगों के बैंक खातों में ट्रांसफर करना आसान हुआ। डिजिटल के माध्यम से जन सेवा केंद्र तक पहुंचना आसान हुआ। देश में सुरक्षित और विश्वसनीय साइबरस्पेस से सरकारी योजनाओं का वेबसाइट के जरिए जानकारी पाना और योजना के लिए आवेदन करना आसान हुआ।

सेवाओं में सुविधा

ई-गवर्नेंस की बात करें तो डिजिटल लेनदेन में वृद्धि हुई है। एलईडी असेंबली यूनिट, सोलर लाइटिंग और छोटे-मोटे उत्पादन इकाई के साथ वाई-फाई चौपाल जैसी उचित सेवा भी गांव-गांव तक पहुंची।

अन्य लाभ

डिजिटल व्यवस्था की सहायता से आज देश में लगभग सारी सुविधाएं ऑनलाइन उपलब्ध कराई गई हैं। ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, डॉक्टर से मिलने का समय निश्चित करना, बच्चों की फीस जमा करना, ऑनलाइन लाक्षणिक जाँच करना, खून जाँच करना, कोई पढ़ाई के लिए आवेदन करना, आदि। कई सरकारी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई हैं जैसे अर्जियां जमा करने, प्रमाणीकरण प्रक्रिया, अनुमोदन और संवितरण की स्वीकृति के द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृति पोर्टल के माध्यम से लाभार्थी के लिए लाभ उपलब्ध कराता है। डिजिटल इंडिया अभियान एक ऐसा मंच है जहां देश के नागरिकों के लिए पूरे देश भर में सरकारी और निजी सेवाओं के प्रभावशाली वितरण को आसान बनाता है।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम : हानि

जिस प्रकार से डिजिटल इंडिया अभियान के लाभ हैं उसी प्रकार इसके कई नुकसान भी हैं। डिजिटल इंडिया होने से गरीबों और कम पढ़े लोगों को कोई भी ठग सकता है क्योंकि उन्हें यह तकनीक समझने में और इससे अभ्यस्त होने में कुछ समय लग जायेगा। कई लोग ऑनलाइन माध्यम से भले लोगों को लूटने तथा ठगने का काम करते है। डिजिटल इंडिया अभियान से लोगों को लूटने का नया साधन ढूढ़ लिया है। कई लोग गलत जगह अपनी जानकारी देकर भारी नुकसान का सामना करते है। अगर आपको सही जानकारी ना हो तो आप डिजिटल व्यवस्था उपयोग नहीं कर सकते और आप उसका लाभ नहीं उठा सकते।

डिजिटल क्राइम

कंप्यूटर हैक करना, महत्वपूर्ण सेक्टर्स पे साइबर हमला होना काफी नुकसानदायी है। यह देश की संपत्ति पर भी धोखा पैदा करने जैसा है।

छोटे और मध्यम उद्योगों का नुकसान

नई आधुनिक तकनीक को अपनाने के लिए कई छोटे और मध्यम उद्योगों को काफी मशक्कत करनी पड़ती है।

ग्रामीण भारत से डिजिटल इंडिया प्रौद्योगिकी यात्रा

ग्रामीण भारत से डिजिटल इंडिया प्रौद्योगिकी यात्रा में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार, प्रशासन, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था जैसे लगभग हर क्षेत्र में सुधार व विकास हुआ है ।

डिजिटल भारत : प्रौद्योगिकी के सहारे नवीनतम पहल

देश के 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग यूनिट का उद्घाटन हुआ। इन यूनिट पर तमाम बैंकिंग उत्पाद और सर्विसेज आसानी से मिलेंगी। यहाँ तक कि पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर के कुछ बैंकों ने डिजिटल बैंकिंग यूनिट भी स्थापित किए हैं।

हालही में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा एक डिजिटल प्लेटफॉर्म लॉन्च किया गया है जिसका नाम ई-रूपी (E-rupi) डिजिटल प्लेटफॉर्म है।

यह एक ऐसा जरिया है जिसके माध्यम से कैशलेस और संपर्क रहित डिजिटल पेमेंट की जा सकती है। सरल भाषा में कहें तो इस डिजिटल प्लेटफॉर्म के अंतर्गत सभी बैंकों के माध्यम से ई-रुपया जारी किए जाएंगे।

यह एक ऐसा वाउचर है जो पूरी तरह से क्यूआर कोड या एसएमएस स्ट्रिंग पर आधारित है जिसका इस्तेमाल मोबाइल के जरिए किया जा सकेगा।

5G का आगाज (Launch)

प्रधानमंत्री मोदी ने कुछ ही दिन पहले हमारे देश में 21वीं सदी की सबसे बड़ी शक्ति का आगाज किया, जो 'आत्मनिर्भर' भारत को कायम करने में मदद करेगी। इसके साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन तकनीक जैसे क्षेत्रों में भी काफ़ी प्रगति हुई। ब्लॉकचेन एक ऐसी तकनीक है जिससे बिटकॉइन तथा अन्य क्रिप्टो-करेंसियों को संचालित किया जाता है। यदि इसे सरल शब्दों में समझा जाए तो यह एक डिजिटल 'सार्वजनिक बही-खाता' (Public Ledger) है, जिसमें प्रत्येक लेन-देन का रिकॉर्ड दर्ज़ किया जाता है ।

उपसंहार

आज सरकार ने सभी डिजिटल सुविधाएँ और सेवाएं लोगों के लिए शुरू कर दी है। आज देश के हर युवा बड़े पैमाने में डिजिटल अभियान का लाभ उठा रहे हैं और अपने रोजमर्रा जीवन में डिजिटल भुगतान कर रहे हैं। कई गांव आज भी ऐसे हैं जहां इस अभियान की शुरुआत नहीं हुई है और इसकी सेवाएं उपलब्ध नहीं है। लेकिन आने वाले समय में हम आशा करते हैं कि डिजिटल इंडिया की सेवा हर गांव, हर घर में पहुंचे और इसका लाभ देश के हर नागरिक को मिले ।

आलेख

डिजिटल बैंकिंग इकाई

अविनाश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, पुणे

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने दिनांक 16 अक्तूबर 2022 को भारतवासियों को डिजिटल बैंकिंग इकाईयों (Digital Banking Units) का उपहार दिया है। ये डिजिटल बैंकिंग इकाई देश के 75 विभिन्न जिलों में बैंकिंग कार्य को सुगम बनाएगी।

क्या है डिजिटल बैंकिंग इकाई :

भारतीय रिज़र्व बैंक ने भारतीय बैंक संघ (Indian Banks Association - IBA) के एक कार्यकारी समूह की रिपोर्ट के पश्चात डिजिटल बैंकिंग इकाई संबंधी दिशानिर्देशों जारी किए थे। डिजिटल बैंकिंग इकाई से मतलब एक खास कारोबार इकाई अथवा केंद्र से है जहाँ बुनियादी डिजिटल सुविधाएं उपलब्ध हों। भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुसार, डिजिटल बैंकिंग इकाई, विशेषीकृत कारोबार इकाई हेतु एक ऐसा निर्धारित केंद्र है जहाँ न्यूनतम आवश्यक डिजिटल संरचना उपलब्ध होती है तथा ये ग्राहकों को 24x7 आधार पर डिजिटल बैंकिंग उत्पाद अथवा सेवाएं उपलब्ध कराता है और इसके साथ ही मौजूदा वित्तीय उत्पाद एवं सेवाएं भी उपलब्ध कराती है। ऐसे केंद्रों पर ग्राहक स्वयं ही सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं या वे वहाँ मौजूद बैंक कर्मचारी की सहायता से भी बैंकिंग सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं। भा.रि.बैं. के अनुसार, डिजिटल बैंकिंग इकाई ग्राहकों को बैंकों के उत्पादों और सेवाओं के कुशल, कागज रहित, सुरक्षित और कम लागत में अच्छी और उन्नत डिजिटल सेवा प्रदान करने में सक्षम बनाएगा।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने डिजिटल बैंकिंग इकाइयों का शुभारंभ करते हुए कहा है कि ये डिजिटल बैंकिंग इकाई वित्तीय संबंधी कार्यों को आसान करेंगी और देश के लोगों की बैंकिंग कामों में सुधार लाएंगी। प्रधानमंत्री ने इन्हें कम से कम डिजिटल बुनियादी ढांचों के साथ अधिकतम सुविधाएं देने वाली इकाइयों के तौर पर परिभाषित किया है।

साल 2022-23 के बजट में वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कहा था कि हाल के वर्षों में, देश में डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल भुगतान और फिनटेक से जुड़ी नई चीजों में तेजी से वृद्धि हुई है। उन्होंने उम्मीद जताई कि डिजिटल बैंकिंग इकाइयों का फायदा देश के कोने-कोने में उपभोक्ताओं तक अवश्य पहुंचेगा।

वित्त संबंधी जरूरी कार्यों में तकनीक के इस्तेमाल को फिनटेक (Financial Technology) कहा जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जाए कि बैंकिंग संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बैंक परिसर में जाकर पारंपरिक तरीके से वित्तीय सेवाओं का उपभोग करना या किसी बैंकिंग कार्य को पूरा करने के उलट वित्तीय सेवाओं और विभिन्न बैंकों और व्यापार में वित्तीय पहलुओं के प्रबंधन में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल ही फिनटेक है। इसे ही ध्यान में रखते हुए और इससे एक कदम आगे बढ़ते हुए देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में वाणिज्यिक बैंकों द्वारा देश के 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयां (डीबीयू) खोली गई हैं। इस प्रकार की डिजिटल बैंकिंग इकाइयां खाताधारकों को विभिन्न प्रकार की डिजिटल बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराएंगी। यहाँ से खाताधारक किसी भी समय एवं किसी भी दिन (24x7 आधार पर) विभिन्न बैंकिंग सेवाएं जैसे कि बचत खाते खोलने, खाते में शेषराशि की जाँच करने, पासबुक प्रिंट करने, पैसे का अंतरण करने, सावधि जमा, ऋण हेतु आवेदन, स्टॉप-पेमेंट, क्रेडिट और डेबिट कार्ड के लिए आवेदन, कर और बिलों के भुगतान तथा नामांकन संबंधी निर्देश आदि बैंकिंग कार्य कर पाने में सक्षम होंगे। इससे ग्राहकों को पूरे बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं का किफायती और सुविधाजनक तरीके से हासिल करने और बेहतर डिजिटल सेवा प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इस तरह की सेवाओं से ग्राहकों को विदेशी मुद्रा जोखिम को कम करने, विभिन्न योजनाओं के तहत आने वाले बचत बैंक खाते खोलने, चालू खाते खोलने, सावधि जमा और आवर्ती जमा खाते खोलने में मदद मिलेगी और ग्राहकों को डिजिटल किट, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग,

और मास ट्रांजिट सिस्टम कार्ड, व्यापारियों के लिए डिजिटल किट, यूपीआई, क्यूआर कोड, भीम, आधार और बिक्री केंद्र (पीओएस) आदि का फायदा भी मिल पाएगा।

डिजिटल बैंकिंग इकाई की अन्य सेवाओं के अंतर्गत खुदरा एमएसएमई या योजनाबद्ध ऋणों के लिए ग्राहकों के लिए आवेदन करना भी शामिल है। इन केंद्रों पर ऐसे ऋणों के लिए पूरी तरह से डिजिटल प्रसंस्करण का इस्तेमाल किया जाएगा। इसमें ऑनलाइन आवेदन से लेकर वितरण तक और नेशनल पोर्टल के तहत आने वाली सरकार की प्रायोजित योजनाओं का लाभ लेने में मदद करना भी शामिल होगा।

फिलहाल, कर्नाटक, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, ओडिशा और राजस्थान में चार-चार इकाई स्थापित किए गए हैं। गुजरात, केरल मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, सिक्किम और तेलंगाना राज्यों में तीन-तीन डिजिटल बैंकिंग इकाई स्थापित किए गए हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के साथ-साथ क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, भुगतान बैंकों और स्थानीय क्षेत्र के बैंकों को डिजिटल बैंकिंग खोलने की अनुमति दी गई है। ऐसे डिजिटल बैंकिंग खोलने के लिए किसी भी बैंक को भारतीय रिज़र्व बैंक से मंजूरी लेने की आवश्यकता भी नहीं है बशर्ते कि वे किसी खास वजह से प्रतिबंधित न किए गए हों। ऐसी इकाइयों की स्थापना यह सुनिश्चित करने के लिए की जा रही है कि डिजिटल बैंकिंग देश के कोने-कोने अर्थात सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक भी पहुंच सके।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के अलावा, निजी क्षेत्र के बैंक जैसे आईसीआईसीआई और एचडीएफसी बैंक ने डीबीयू बनाने की घोषणा की है। आईसीआईसीआई बैंक की डिजिटल बैंकिंग यूनिट की दो खास विशेषताएं होंगी। इनमें एक स्वयं सेवा जोन और एक डिजिटल सहायता जोन शामिल होगा। स्वयं सेवा जोन में ग्राहक एटीएम, एक नकदी जमा मशीन (सीडीएम) और एक बहु-कार्यात्मक कियोस्क (मल्टीफंक्सनल कियोस्क) का इस्तेमाल किया जाएगा। ये पासबुक में प्रविष्टि करने, चेक जमा करने और इंटरनेट

बैंकिंग जैसी सुविधाएं प्राप्त करने में ग्राहकों को समर्थ बनाएंगी। यह एक डिजिटल इंटरैक्टिव स्क्रीन भी प्रदान करेगा जिसके माध्यम से ग्राहक उत्पादों, ऑफ़रों और ग्राहकों हेतु बैंक की सूचनाओं के बारे में जानने के लिए चैट के माध्यम से बातचीत भी कर पाएंगे।

इसके साथ ही, डिजिटल सहायता जोन में शाखा के अधिकारी भी मौजूद होंगे जो ग्राहकों को बचत खाता, चालू खाता, सावधि जमा और आवर्ती जमा आदि खोलने जैसी बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने में मदद करेंगे। इस तरह की सेवाएं प्रदान करने में पूरी तरह से डिजिटल तरीका अपनाया जाएगा। इसमें टैब के माध्यम से आधार आधारित ईकेवाईसी (आधार इनेबल्ड ईकेवाईसी) को इस्तेमाल में लाया जा सकेगा।

एचडीएफसी बैंक के डीबीयू में इंटरैक्टिव एटीएम, कैश डिपॉजिट मशीन, इंटरएक्टिव डिजिटल वॉल, नेट बैंकिंग कियोस्क, वीडियो कॉल और टैब बैंकिंग का इस्तेमाल करके ग्राहक लेनदेन के लिए एक स्वयं सेवा जोन उपलबध होगा। इसके साथ डिजिटल बैंकिंग इकाई में दो बैंक कर्मचारियों वाला एक सहायक जोन भी होगा।

इस प्रकार, भारतीय बैंक डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में अपने ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए पूरी तरह सक्षम हो जाएंगे।

शिक्षा और मेहनत एक सुनहरी चाबी होती है जो बंद भाग्य के दरवाजों को आसानी से खोल देती है।

– स्वामी विवेकानंद

आलेख

डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में क्रांति - केनरा बैंक की न्यू मोबाइल बैंकिंग एप्लिकेशन केनरा ai1

अंकिता रानी
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

भारत में पिछले कुछ वर्षों के दौरान मोबाइल बैंकिंग का चलन तेजी से बढ़ा है। नोटबंदी के दौर में कैश की किल्लत बढ़ने से लोगों ने मोबाइल बैंकिंग या फिर यूँ कहें कि डिजिटल पेमेंट को एक बेहतर विकल्प के तौर पर अपनाया है। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'डिजिटल इंडिया' अभियान से प्रभावित होकर भी लोग मोबाइल बैंकिंग के प्रति तेजी से आकर्षित हो रहे हैं और देश 'नगद रहित अर्थव्यवस्था' की ओर चल पड़ा है। सरकार के अभियान से प्रभावित होते हुए बैंक भी अब बैंकिंग के डिजिटल तकनीक को सुगम और सुरक्षित बनाने की दिशा में पूरे समर्पण से जुटे हैं।

यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे देश में अब मोबाइल बैंकिंग रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। इसकी कई वजह भी हैं। बैंकिंग की इस तकनीक से न केवल कैशलेस लेनदेन की सुविधा मिलती है बल्कि इससे कई अन्य सुविधाओं का भी लाभ उठाया जा सकता है। मोबाइल बैंकिंग सुविधा का इस समय कई लोगों द्वारा उपयोग किया जा रही है।

मोबाइल बैंकिंग सेवा एक प्रौद्योगिकी आधारित सेवा है, जो बैंक को अपने ग्राहकों को मोबाइल हैंडसेट पर बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने में सक्षम बनाती है। यह मोबाइल बैंकिंग ग्राहक को मोबाइल हैंडसेट के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से बैंक के साथ वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों लेनदेन करने की सुविधा प्रदान करता है। यह उपयोगकर्ता को न्यूनतम इनपुट और उन्नत भुगतान पहचानकर्ताओं के साथ स्मार्ट फोन के माध्यम से खाते की जानकारी प्राप्त करने और इलेक्ट्रॉनिक रूप से लेनदेन करने की सुविधा प्रदान करता है।

मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई हमारे बैंक को ग्राहक के परिसर में ले जाते हैं और उन्हें बिना किसी स्थान और समय के प्रतिबंध के आसानी से बैंकिंग सुविधा प्रदान करते हैं। मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई रिमोट एक्सेस की सुविधा प्रदान करते हैं और ग्राहक मोबाइल हैंडसेट और इंटरनेट कनेक्शन के साथ अपनी उंगलियों पर अर्थात बहुत ही सरलता से वित्तीय और गैर-वित्तीय लेनदेन कर सकते हैं। इसके अलावा, यह बैंक को ग्राहक-विशिष्ट दृष्टिकोण के साथ हमारे उत्पादों के बारे में सभी प्रासंगिक जानकारी पेश करने का अवसर देता है। चूंकि, केनरा बैंक मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई सेवाओं के लिए एक एकीकृत एप्लिकेशन प्रदान करता है और मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई सिस्टम को इंटरनेट पर प्रसारित होने वाले डेटा की गोपनीयता और अखंडता के उपयोग और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए केनरा ai1 ऐप को डिज़ाइन किया गया है।

केनरा ai1 क्या है ?

केनरा ai1 एक मोबाइल बैंकिंग एप्लिकेशन है जो आपको मोबाइल फोन का उपयोग करके अपने बैंक खाते तक पहुंचने की अनुमति देती है। यह बैंकिंग ऐप अपने ग्राहकों की बैंकिंग जरूरतों को पूरा करने के लिए 250 से अधिक सुविधाओं के साथ वन-स्टॉप समाधान है। इसका उद्देश्य विभिन्न विशिष्ट सेवाओं का लाभ उठाने के लिए सालों से काम करने वाले कई मोबाइल ऐप की आवश्यकता को समाप्त करना है। आप इस एप्लिकेशन का उपयोग करके खाते से संबंधित जानकारी देख सकते हैं, फंड ट्रांसफर कर सकते हैं, बिलों का भुगतान कर सकते हैं और अपना मोबाइल रिचार्ज कर सकते हैं एवं और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। बचत खाता/ चालू खाता/ ओवरड्राफ्ट खातों वाले बैंक के ग्राहक और वैध डेबिट कार्ड/इंटरनेट बैंकिंग क्रेडेंशियल्स या शाखा टोकन रखने वाले केनरा ai1 ऐप का उपयोग कर सकते हैं। खाता केवाईसी अनुपालन वाला होना चाहिए। ग्राहक अपने खाते की शेष राशि की जांच कर सकते हैं, मिनी स्टेटमेंट प्राप्त कर सकते हैं, एनईएफटी, आईएमपीएस 24X7, यूपीआई आदि का उपयोग करके केनरा बैंक खातों और अन्य बैंक खातों में धन अंतरित कर सकते हैं, चेक रोक सकते हैं, चेक की स्थिति जान सकते हैं, शाखा/एटीएम के स्थानों आदि के बारे में भी जान सकते हैं।

- मोबाइल बैंकिंग इन्टरनेट बैंकिंग से अधिक सुविधाजनक है। जहाँ ऑनलाइन बैंकिंग के लिए कंप्यूटर और इंटरनेट की आवश्यकता है वहीं मोबाइल बैंकिंग का प्रयोग बहुत आसानी से एक छोटे से फ़ोन के माध्यम से भी की जा सकती है। साथ ही नेट बैंकिंग में सर्वर की दिक्क़त हो सकती है, लेकिन मोबाइल बैंकिंग में ऐसी किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता।
- केनरा ai1 ऐप की सहायता से कई तरह के बिल घर बैठे ही भरे जा सकते हैं। इसकी सहायता से लम्बी कतारों में खड़े होने से बचा जा सकता है।
- किसी भी समय की जाने वाली बैंकिंग अर्थात केनरा ai1 ऐप की सबसे बड़ी सुविधा ये है कि इसकी सहायता से किसी भी समय कहीं से भी बैंकिंग की जा सकती है। बैंक बंद हो जाने के बाद भी ग्राहक अपने मोबाइल बैंकिंग की सहायता से पैसे का ट्रांजेक्शन कर सकता है।
- फ्री बैंकिंग सर्विस मतलब बैंक द्वारा दी गयी मोबाइल बैंकिंग की सुविधा के लिए बैंक कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लेता और न ही अपने अकाउंट जाँच करने की कोई सीमा तय है। ग्राहक जितनी बार चाहे अपने बैंक अकाउंट मोबाइल में खोल सकता है।
- केनरा बैंक ने केनरा ai1 ऐसा एप्लीकेशन तैयार किया है। जिसके अंतर्गत ग्राहक बैंक के मुख्य सर्वर से जुड़ा रह सकता है परंतु उसके बैंक अकाउंट की कोई भी जानकारी मोबाइल फ़ोन या सिम कार्ड में सेव नहीं होती है। ये एप्लीकेशन ऐसी तकनीक का इस्तेमाल करके बना होता है, जिसमे सुरक्षा बहुत अधिक बढ़ जाती है।
- केनरा ai1 ऐप 11 भाषाओं में उपलब्ध है, ताकि समाज के विभिन्न वर्गों को उनकी पसंदीदा भाषा में सेवा प्रदान की जा सके।
- केनरा ai1 ऐप में कई थीम और मेनू के साथ एक सहज उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस (यूआई) और उपयोगकर्ता अनुभव (यूएक्स) जैसी उन्नत विशेषताएं हैं, जिन्हें उपयोगकर्ता की पसंद के अनुसार वैयक्तिकृत किया जा सकता है।
- यह विज़ुअल एर्गोनॉमिक्स को बेहतर बनाने, आंखों के तनाव को कम करने, वर्तमान प्रकाश की स्थिति में चमक को समायोजित करने और अंधेरे वातावरण में स्क्रीन के

उपयोग की सुविधा प्रदान करने के लिए एक डार्क थीम भी प्रदान करता है, यह सब बैटरी पावर को संरक्षित करते हुए कार्य करता है।

- केनरा ai1 ऐप विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को पूरा करता है जिसमें सार्वजनिक भविष्य निधि खाता, सुकन्या समृद्धि खाता, वरिष्ठ नागरिकों के बचत खाते, किसान विकास पत्र और अन्य शामिल हैं।
- अपनी जमाराशियों तक पहुँच सकते हैं। (जैसे कि एफडी/आरडी/टैक्स सेवर डिपॉजिट)।
- अपने ऐप की थीम बदल सकते हैं।

ऐसे ही कई आश्चर्यजनक सुविधाएँ लेकर केनरा ai1 ग्राहकों के बीच बड़ी तेजी से विस्तार पा रहा है।

केनरा ai1 ऐप –मोबाइल बैंकिंग में क्या–क्या सावधानियां बरतें –

- कभी भी अपना यूज़र आईडी, बैंक खाते की जानकारी और पासवर्ड या मोबाइल पिन से संबंधित जानकारी अपने फ़ोन के डिवाइस में न रखें। किसी गलत हाथों में मोबाइल जाने से आपको नुकसान हो सकता है।
- केनरा ai1 ऐप या तो अपने बैंक के वेबसाइट से या फिर गूगल प्ले स्टोर से ही डाउनलोड करें। किसी अन्य वेबसाइट से डाउनलोड करने पर आप साइबर ठगी के शिकार हो सकते हैं।
- अगर कहीं आपके मोबाइल को नेटवर्क न मिल रहा हो तो लालच में फ्री वाई–फाई या हॉट–स्पॉट से मोबाइल बैंकिंग केनरा ai1 ऐप का उपयोग न करें। अगर आप ऐसा करते हैं तो आपके डाटा का चोरी होने की आशंका बनी रहेगी।

- अपने बैंक अकाउंट या मोबाइल बैंकिंग से संबंधित डाटा को टेक्स्ट मेसेज के जरिए भेजने की भी कभी गलती न करें।
- साइबर चोर इतने शातिर होते हैं कि वो फ़ोन पर बात करने के दौरान भी आपके फ़ोन से डाटा ट्रान्सफर कर सकते हैं। इसलिए अनजान कॉल आने पर उनसे बात करने में सावधानी बरतें।

अंत में सबसे जरूरी बात- फ़ोन को लॉक करने के साथ ऐप को भी पासवर्ड से लॉक रखना न भूलें।

निष्कर्ष-

केनरा ai1 ऐप की सहायता से अपने सभी खातों और लेन-देन का एक ही दृश्य प्राप्त कर सकते हैं। व्यक्तिगत ऑफर्स का आनंद प्राप्त कर सकते हैं, आसानी से क्रेडिट कार्ड और अन्य ऋणों के लिए आवेदन कर सकते हैं, म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकते हैं और अपनी स्क्रीन पर कुछ टैप के साथ बीमा प्राप्त कर सकते हैं और अगर यह पर्याप्त नहीं है, तो आप अपनी फ्लाइट्स, होटल, कैब भी बुक कर सकते हैं, बिलों का भुगतान कर सकते हैं और विशेष रूप से ऐप के माध्यम से उपलब्ध 250+ ऑफ़र का आनंद ले सकते हैं।

यह ग्राहकों को केवल स्मार्टफोन का उपयोग करके किसी भी स्थान से अपनी सुविधानुसार 24x7 बैंकिंग लेनदेन करने में मदद करता है अर्थात बैंकिंग आपकी उंगलियों पर ।

टॉलस्टॉय की प्रेरक कहानी

एक दिन रूसी विद्वान और दार्शनिक टॉलस्टॉय जीवन और मृत्यु पर बोल रहे थे। जो लोग टॉलस्टॉय को सुन रहे थे, उन्होंने कहा, आप हमेशा जो भी बात करते हैं, उसमें जीवन या मृत्यु का जिक्र जरूर करते हैं। तो क्या आपको जीवन-मृत्यु से इतना प्रेम है? इसलिए आप अलग-अलग ढंग से इनकी व्याख्या करते हैं।'

टॉलस्टॉय ने कहा, मैंने बड़े भाई को टीबी से मरते देखा था और मैं उस दृश्य को भूला नहीं सका हूं। समय-समय मेरे पारिवारिक जीवन में ऐसी स्थितियां बनी हैं कि एक बार तो मेरा मन आत्महत्या करने का हो रहा था। फिर मैंने जीवन का अर्थ समझा। इसके बाद मैं जीवन और मृत्यु को इस किस्से से समझाता हूं, एक बार एक व्यक्ति कहीं जा रहा था और उसके सामने एक पागल हाथी आ गया। हाथी से बचने के लिए व्यक्ति दौड़ा तो वह एक कुएं में गिर गया। गिरते समय उसने कुएं में उगे हुए एक पेड़ की डाल पकड़ ली।

उस व्यक्ति ने कुएं में नीचे देखा तो वहां एक मगरमच्छ था। मगरमच्छ को देखकर वह व्यक्ति और ज्यादा घबरा रहा था। उस पेड़ में मधुमक्खी का एक छत्ता था। उसमें से शहद की बूंदे गिर रही थी। पेड़ की डाल पर लटकते हुए उस व्यक्ति ने मुंह खोला तो शहद की बूंदे उसके मुंह में गिरने लगीं तो वह शहद पीने लगा। तभी उसने देखा कि दो चूहे एक सफेद और एक काला, दोनों पेड़ की जड़ को कुतर रहे हैं। ये सब देखकर उस व्यक्ति को समझ नहीं आ रहा था कि ये सब क्या हो रहा है?

ये कहानी सुन रहे लोगों ने टॉलस्टॉय से पूछा कि आप इस कहानी के माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?

टॉलस्टॉय बोले, 'इस कहानी में जो हाथी है, वह काल है। व्यक्ति को काल का धक्का लगा। मगरमच्छ साक्षात मृत्यु का प्रतीक है। शहद की बूंदे जीवन का रस है। जो चूहे पड़े की जड़ को कुतर रहे थे वे दिन और रात है। बस इसी तरह हमारा जीवन चलता है। कभी आशा, कभी निराशा। जीवन-मृत्यु के बीच जितने अच्छे-बुरे अवसर आते हैं, हमें सभी का रसपान करना चाहिए यानी आनंद लेना चाहिए।'

सीख: सुख-दुख सभी के जीवन में आते-जाते रहते हैं। कोरोना महामारी के पिछले दो सालों में जीवन-मृत्यु आमने-सामने खड़े थे। हमें जीवन के हर एक पल का आनंद लेना चाहिए। हर परिस्थिति में सकारात्मक रहेंगे तो जीवन में शांति बनी रहेगी।

आलेख

भारत में एमएसएमई क्षेत्र के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए किए जा रहे उपाय

मोहित सक्सेना
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, लखनऊ

आर्थिक विकास की जब भी चर्चा की जाती है, दो प्रमुख बातों पर ध्यान केंद्रित होता है – सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि और देश भर में प्रमुख उद्योगों का विकास। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में एक बड़ा योगदान उसके विभिन्न उद्योगों की समृद्धि में निहित होता है। चाहे वह ग्रेट ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के युग से हो या जापान में औद्योगिक क्रांति से, इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि कैसे ये दोनों देश महाशक्तियों के रूप में उभरे।

इन महाशक्तियों की समृद्धि का कारण बनने वाली प्रमुख शक्ति क्या थी? यह छोटे उद्योगों का विकास था जो आगे चलकर देश के आर्थिक विकास का पावर हाउस बना। जी हां, हम बात कर रहे हैं एमएसएमई क्षेत्र की, जो उद्यमिता की नर्सरी है, जो अक्सर व्यक्तिगत रचनात्मकता और नवाचार से प्रेरित होता है।

एमएसएमई क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पाद में 30 प्रतिशत, विनिर्माण उत्पादन में 45 प्रतिशत और इसके निर्यात में 49 प्रतिशत का योगदान देता है। एमएसएमई लगभग 120 मिलियन व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करते हैं। एमएसएमई न्यायपरता और समावेश के साथ विकास के राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

एमएसएमई की महत्ता

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर एमएसएमई के प्रभाव को देखते हुए, आइए राष्ट्र निर्माण में एमएसएमई की महत्वपूर्ण भूमिका पर गौर करें।

रोजगार: यह कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार पैदा करने वाला क्षेत्र है। यह भारत में लगभग 120 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

सकल घरेलू उत्पाद में योगदान: देश के भौगोलिक विस्तार में लगभग 36.1 मिलियन इकाइयों के साथ, एमएसएमई विनिर्माण सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 6.11 प्रतिशत और सेवा गतिविधियों से सकल घरेलू उत्पाद का 24.63 प्रतिशत योगदान करते हैं। एमएसएमई मंत्रालय ने 2025 तक सकल घरेलू उत्पाद में अपने योगदान को 50 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है ताकि भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सके।

निर्यात: यह भारत से कुल निर्यात में लगभग 45 प्रतिशत का योगदान देता है।

समावेशी विकास: एमएसएमई ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान करके समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं, खासकर उन लोगों को जो समाज के वंचित वर्गों से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, खादी और ग्रामोद्योगों में प्रति व्यक्ति कम निवेश की आवश्यकता होती है और ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार मिलता है।

वित्तीय समावेशन: टियर- II और टियर- III शहरों में छोटे उद्योग एवं खुदरा व्यवसाय लोगों के लिए बैंकिंग सेवाओं तथा उत्पादों का उपयोग करने का अवसर पैदा करते हैं।

नवाचार को बढ़ावा देना: यह नवोदित उद्यमियों को रचनात्मक उत्पादों के निर्माण का अवसर प्रदान करता है जो व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा और ईंधन वृद्धि को बढ़ावा देते हैं।

इस प्रकार, भारतीय एमएसएमई क्षेत्र राष्ट्रीय आर्थिक संरचना की रीढ़ है और वैश्विक आर्थिक झटकों एवं प्रतिकूलताओं को दूर करने के लिए लचीलापन प्रदान करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक कवच के रूप में कार्य करता है।

भारत में एमएसएमई के विकास को बढ़ाने के लिए किए जा रहे उपाय

चूंकि दुनिया धीरे-धीरे महामारी के दुष्प्रभावों पर काबू पा रही है और अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे अपने कोविड-पूर्व स्तर की ओर बढ़ रही है, तब यह आत्मनिरीक्षण का समय है कि एमएसएमई क्षेत्र में जितना विकास होना चाहिए वहाँ क्या मुश्किल हो रही है। कुछ लोग इसे कठोर सरकारी नीतियों और एसएमई के लिए एक नियामक ढांचे की अनुपस्थिति पर दोष देते हैं, जो उनके पूर्ण विकास को रोकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस क्षेत्र को रियायतें और कर लाभ दिए गए हैं, लेकिन उनके लचीले विकास के लिए इसे विस्तारित स्तर से आगे जाने की जरूरत है। यह क्षेत्र अभी भी आसान ऋण तक पहुंच की कमी से ग्रस्त है।

हालांकि सरकार विभिन्न ऋण- संबद्ध (क्रेडिट-लिंक्ड) योजनाओं को शुरू करके आसान ऋण के प्रावधान पर ध्यान केंद्रित कर रही है, प्रयासों के बावजूद, वास्तविक स्थिति में बहुत बदलाव नहीं हुआ है। जब वित्तीय संस्थानों द्वारा एमएसएमई क्षेत्र को आसान ऋण प्रदान करने की बात आती है, तो यह देखा जाता है कि अधिकांश उधारकर्ता वित्तीय कागजात पर कमजोर हैं क्योंकि उनके वित्तीय अनुशासन को बनाए रखने का कोई ट्रैक रिकॉर्ड नहीं है। इसके अलावा, पर्याप्त मार्जिन(संपार्श्विक) या यहां तक कि कोई संपार्श्विक की अनुपस्थिति वित्तीय संस्थानों को इस क्षेत्र को अग्रिम ऋण देने के लिए अनिच्छुक बनाती है क्योंकि इससे उन्हें ऋण जोखिम का सामना करना पड़ सकता है।

कोविड-19 के प्रभाव के बाद, सबसे अधिक तनावग्रस्त और प्रभावित एमएसएमई के लिए कई वित्तीय संस्थानों को एकमुश्त पुनर्गठन (One Time Restructuring) तंत्र के साथ सामने आना पड़ा। चुनौती का प्रमुख हिस्सा यह था कि एमएसएमई क्षेत्र अपर्याप्त नकदी प्रवाह से पीड़ित था क्योंकि उनके बड़े खरीदारों से भुगतान प्राप्त न होने के कारण उनका परिचालन चक्र बाधित था जो महामारी से समान रूप से प्रभावित थे। सरकार द्वारा उठाए गए और वित्तीय संस्थानों द्वारा समर्थित राहत उपायों ने पीड़ित इकाइयों को प्रोत्साहन प्रदान किया है और उन्हें व्यवसाय में वापस आने एवं राजस्व उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त समय दिया गया ताकि समय पर ब्याज की सेवा की जा सके।

सरकार ने एमएसएमई के विकास को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपायों की एक श्रृंखला पेश की है

सिडबी द्वारा एमएसएमई को क्रेडिट और हैंडहोल्डिंग सेवाओं की पहुंच में सुधार के लिए Udyami Mitra Portal लॉन्च किया गया।

एमएसएमई संबंध केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों द्वारा एमएसएमई से सार्वजनिक खरीद के कार्यान्वयन की निगरानी करेगा।

एमएसएमई समाधान एमएसएमई विलंबित भुगतान पोर्टल देश भर के सूक्ष्म और लघु उद्यमियों को केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों/ सीपीएसई/ राज्य सरकारों द्वारा विलंबित भुगतान से संबंधित अपने मामलों को सीधे दर्ज करने के लिए सशक्त करेगा।

डिजिटल एमएसएमई योजना में क्लाउड कंप्यूटिंग का उपयोग शामिल है जहां एमएसएमई सामान्य और साथ ही आईटी बुनियादी ढांचे तक पहुंचने के लिए इंटरनेट का उपयोग करते हैं।

प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम एमएसएमई मंत्रालय के तहत एक क्रेडिट-लिंक्ड सब्सिडी कार्यक्रम है।

पारंपरिक उद्योगों के उत्थान के लिए निधि की नवीन योजना (SFURTI) जो पारंपरिक उद्योगों और कारीगरों को समूहों में संगठित करती है तथा उनकी विपणन क्षमता को बढ़ाकर और उन्हें बेहतर कौशल से लैस करके प्रतिस्पर्धी बनाती है।

नवाचार, ग्रामीण उद्योग और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक योजना (एस्पायर) नई नौकरियां पैदा करती है जो बेरोजगारी को कम करती है, उद्यमिता संस्कृति को बढ़ावा देती है, अभिनव व्यापार समाधान आदि की सुविधा प्रदान करती है।

भारतीय एमएसएमई के बीच उनकी प्रक्रियाओं, डिजाइन, प्रौद्योगिकी और बाजार पहुंच में सुधार करके वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता विकसित करने के लिए राष्ट्रीय विनिर्माण प्रतिस्पर्धात्मकता कार्यक्रम (एनएमसीपी) ।

सूक्ष्म एवं लघु उद्यम क्लस्टर विकास कार्यक्रम (एमएसई-सीडीपी) एमएसई की उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के साथ-साथ क्षमता निर्माण के लिए क्लस्टर विकास दृष्टिकोण अपनाता है।

क्रेडिट लिंक्ड कैपिटल सब्सिडी योजना (CLCSS) एमएसएमई के लिए प्रौद्योगिकी के उन्नयन के लिए है।

इसके अलावा, विभिन्न वित्तीय संस्थानों ने राष्ट्रीयकृत बैंकों जैसे केनरा बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया आदि ने एमएसएमई क्षेत्र को ऋण देने के लिए स्ट्रेट थ्रू प्रोसेस(एसटीपी) नामक एक डिजिटल मॉडल को अपनाया है। बैंकिंग का अगला युग एमएसएमई इकाइयों तक पहुंचने और वित्तीय संस्थानों से समय पर प्राप्त वित्तीय सहायता के नुकसान के कारण परियोजनाओं के समय पर निष्पादन के नुकसान के लिए इसे और अधिक सुविधाजनक बना देगा।

रोजगार सृजन के सबसे बड़े स्रोत और आत्मनिर्भर भारत के लिए सरकार की पहल के रूप में क्षेत्र के दायरे को देखते हुए, भारत को एक आत्मनिर्भर देश के रूप में बनाने में एमएसएमई की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। कोविड का प्रभाव बहुत बड़ा है, लेकिन हम धीरे-धीरे इस क्षेत्र को सामान्य स्थिति में लौटते हुए देख रहे हैं। फिनटेक और डिजिटल बैंकिंग के युग में, एमएसएमई निश्चित रूप से समय पर वित्तीय सहायता और आवेदनों के त्वरित निपटान के माध्यम से आगे बढ़ेगा। सिंगल विंडो सिस्टम (भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया चैंपियन पोर्टल) के माध्यम से शिकायतों के समाधान के लिए और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है तथा यह भी सुनिश्चित करना है कि शिकायतों का स्तर धीरे-धीरे कम हो।

हम कितना रोते हैं?

कभी अपने सांवले रंग के लिए, कभी छोटे क़द के लिए, कभी पड़ोसी की बड़ी कार, कभी पड़ोसन के गले का हार, कभी अपने कम मार्क्स, कभी अंग्रेज़ी, कभी पर्सनालिटी, कभी नौकरी की मार तो कभी धंधे में मार...कभी अपने सिंगिंग की लो-स्केल को लेकर...हमें इससे बाहर आना ही पड़ता है....

ये जीवन है... इसे ऐसे ही जीना पड़ता है।

चील की ऊँची उड़ान देखकर चिड़ियां कभी डिप्रेशन में नहीं आती,

वो अपने अस्तित्व में मस्त रहती है,

मगर इंसान, इंसान की ऊँची उड़ान देखकर बहुत जल्दी चिंता में आ जाते हैं।

तुलना से बचें और खुश रहें।

ना किसी से ईर्ष्या, ना किसी से कोई होड़..!

मेरी अपनी हैं मंजिलें, मेरी अपनी ही दौड़..!

कविता

नव वर्ष

श्रेया प्रकाश
मंडल प्रबंधक
अंचल कार्यालय, कोलकाता

आओ, इस नये साल का
स्वागत करें,
सब मिलजुल कर,
ये प्रयास करें।

सूरज नया सवेरा लाता है,
हर पल उम्मीदों को जगाता है,
जीवन में कामयाबी मिलती रहे,
ये पैगाम दे जाता है।

बीते कल से सीखना है,
आनेवाला कल ही अपना है।
प्यार को अपनाना है,
नफरत को दूर भगाना है।

दुख सहने की हिम्मत हो,
खुशियाँ बांटने की आदत हो,
जिन्दगी से हर पल कुछ सीखने
की कोशिश हो।

मुस्कुराना एक कला है,
औरों से क्या गिला है।
आनेवाली खुशियों को देखो,
इसमें अपना ही भला है।

इस नये साल में सब एक दूसरे
से मिलते रहें,
सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और
खुशियों के फूल खिलते रहें।

नितिन गुप्ता
अधिकारी
बायना शाखा, वास्को

कविता

ना निराश हो...

क्यूं निराश है तू, क्यूं हताश है तू,
क्या हुआ ग़र तू, असफल हुआ,
क्या मौका एक ही था ये बस,
जो हाथ से निकल गया,

ताउम्र मौके दस्तक देते रहेंगे,
आज हारे हैं, तो कल जीत के भी रहेंगे,
तू कभी, हिम्मत ना हारना बस,
संघर्ष की मशाल को जलाए रखना,

दिल में हौसलों को जगाए रखना,
ठंडी ना पड़ जाए ये जीत की आग,
ये दिमाग़ को समझाए रखना,
फिर देख तेरी किस्मत कैसे घूमेगी,

सफलता तेरे ही कदम चूमेगी,
हर तरफ, तेरा ही परचम लहराएगा,
आशा, ना छोड़ना कभी जीवन में,
कश्ती तूफ़ानों से, तू ही निकाल लाएगा।

आप आज जो करते हैं
उस पर भविष्य निर्भर करता है।
– महात्मा गांधी

लघु कथा

बसंत पंचमी

राजीव रस्तोगी
मण्डल प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तर दिल्ली

बसंत पंचमी हिंदुओं का एक त्योहार है। इस दिन विद्या की देवी सरस्वती की पूजा की जाती है तथा इस दिन विशेष रूप से पीले वस्त्र धारण किए जाते हैं ।

प्राचीन भारत में पूरे साल को जिन छ: मौसमों में बांटा जाता था उनमें बसंत लोगों का सबसे मनचाहा मौसम था। जब फूलों पर बहार आ जाती, खेतों में सरसों के फूल मानो सोने जैसा चमकने लगते, जौ और गेहूं की बालियां खिलने लगती। आमों के पेड़ों पर मंजरी आ जाती और हर तरफ रंग बिरंगी तितलियां मंडराने लगती एवं फूलों पर भौंरे मंडराने लगते। बसंत ऋतु का स्वागत करने के लिए माघ महीने के पांचवे दिन एक बड़ा जश्न मनाया जाता था जिसमें विष्णु और कामदेव की पूजा की जाती है । यह बसंत पंचमी का त्योहार कहलाता है। शास्त्रों में बसंत पंचमी को ऋषि पंचमी से उल्लिखित किया गया है, साथ ही पुराणों तथा अनेक काव्य ग्रंथों में भी अलग-अलग ढंग से इसका चित्रण मिलता है ।

उपनिषदों की कथा के अनुसार सृष्टि के प्रारंभिक काल में भगवान शिव की आज्ञा से भगवान ब्रह्मा ने जीवों खासतौर पर मनुष्य योनी की रचना की। लेकिन अपनी सर्जना से वे संतुष्ट नहीं थे, उन्हें लगा था कि कुछ कमी रह गई है जिसके कारण चारों ओर मौन छाया रहता है ।

तब ब्रह्मा जी ने इस समस्या के निवारण के लिए अपने कमंडल से जल अपनी हथेली में लेकर संकल्प स्वरूप उस जल को छिड़ककर भगवान श्री विष्णु की स्तुति करनी आरम्भ की । ब्रह्मा जी की स्तुति को सुन कर भगवान विष्णु तत्काल ही उनके सम्मुख प्रकट हो गए और उनकी समस्या जानकर भगवान विष्णु ने आदिशक्ति दुर्गा माता का आह्वान किया। विष्णु जी द्वारा आह्वान होने के कारण भगवती दुर्गा वहां तुरंत ही प्रकट हो गईं तब ब्रह्मा एवं विष्णु जी ने उनसे इस संकट को दूर करने का निवेदन किया।

ब्रह्मा जी तथा विष्णु जी की बातों को सुनने के बाद उसी क्षण आदिशक्ति दुर्गा माता के शरीर से श्वेत रंग का एक भारी तेज उत्पन्न हुआ जो एक दिव्य नारी के रूप में बदल गया। यह स्वरूप एक चतुर्भुजी सुंदर स्त्री का था जिनके एक हाथ में वीणा तथा दूसरा हाथ वरमुद्रा में था। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक एवं माला थी। आदिशक्ति श्री दुर्गा के शरीर से उत्पन्न तेज से प्रकट होते ही उन देवी ने वीणा का मधुरनाद किया जिससे संसार के समस्त जीव जंतुओं को वाणी प्राप्त हो गई। जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया। पवन चलने से सरसराहट होने लगी । तब सभी देवताओं ने शब्द और रस का संचार देने वाली उन देवी को वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती कहा।

फिर आदिशक्ति भगवती दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि मेरे तेज से उत्पन्न हुई ये देवी सरस्वती आपकी पत्नी बनेंगी, जैसे लक्ष्मी श्री विष्णु की शक्ति हैं, पार्वती महादेव की शक्ति हैं उसी प्रकार ये सरस्वती देवी ही आपकी शक्ति होंगी। ऐसा कह कर आदिशक्ति श्री दुर्गा सब देवताओं को देखते - देखते वहीं अंतर्ध्यान हो गईं।

इसके बाद सभी देवता सृष्टि के संचालन में संलग्न हो गएं ।

सरस्वती को वगीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावादनी और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है। ये विद्या और बुद्धि प्रदाता है। संगीत की उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी हैं। बसंत पंचमी के दिन को इनके प्रकटोत्सव के रूप में भी मनाते हैं। ऋग्वेद में भगवती सरस्वती का वर्णन करते हुए महत्व बताया गया है-

पर्व का महत्व

बसंत ऋतु आते ही प्रकृति का कण -कण खिल उठता है। मानव तो क्या पशु-पक्षी तक उल्लास से भर जाते हैं। हर दिन नयी उमंग से सूर्योदय होता है और नई चेतना प्रदान कर अगले दिन आने का आश्वासन देकर चला जाता है ।

यूं तो माघ का यह पूरा मास ही उत्साह देने वाला है , पर बसंत पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी) का पर्व भारतीय जन जीवन को अनेक तरह से प्रभावित करता है। प्राचीन काल से इसे ज्ञान और कला की देवी मां

सरस्वती का जन्मदिवस माना जाता है। जो शिक्षाविद भारत और भारतीयता से प्रेम करते हैं, वे इस दिन मां शारदा की पूजा कर उनसे और अधिक ज्ञानवान होने की प्रार्थना करते हैं। कलाकारों का तो कहना ही क्या? जो महत्व सैनिकों के लिए अपने शास्त्रों और विजयदशमी का है, जो विद्वानों के लिए अपनी पुस्तकों और व्यास पूर्णिमा का है, जो व्यापारियों के लिए अपने तराजू बाट, बहीखातों और दीपावली का है, वही महत्व कलाकारों के लिए बसंत पंचमी का है। चाहे वे कवि हो या लेखक, गायक हो या वादक, नाटककार हो या नृत्यकार, सब दिन का प्रारम्भ अपने उपकरणों की पूजा और मां सरस्वती की वंदना से ही करते हैं।

ऐतिहासिक महत्व

बसंत पंचमी का दिन हमें पृथ्वीराज चौहान की भी याद दिलाता है। उन्होनें विदेशी हमलावर मोहम्मद गोरी को 16 बार पराजित किया और उदारता दिखाते हुए हर बार जीवित छोड़ दिया, पर जब सत्रहवीं बार वे पराजित हुए, तो मोहम्मद गोरी ने उन्हें नहीं छोड़ा। वह उन्हें अपने साथ अफगानिस्तान ले गया और उनकी आंखें फोड़ दी। इसके बाद की घटना तो जग प्रसिद्ध ही है। मोहम्मद गौरी ने मृत्युदंड देने से पूर्व उनके शब्दभेदी बाण का कमाल देखना चाहा। पृथ्वीराज के साथी कवि चंदबरदाई के परामर्श पर गोरी ने ऊंचे स्थान पर बैठकर तवे पर चोट मारकर संकेत किया। तभी चंदबरदाई ने पृथवीराज को संदेश दिया।

चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।।

पृथ्वीराज चौहान ने इस बार भूल नहीं की। उन्होंने तवे पर हुई चोट और चंदबरदाई के संकेत से अनुमान लगाकर जो बाण मारा, वह

मोहम्मद गोरी के सीने में जा धंसा। इसके बाद चंदबरदाई और पृथ्वीराज ने भी एक दूसरे के पेट में छुरा घोंपकर आत्मबलिदान दे दिया (1192 ईसवी) । यह घटना भी बसंत पंचमी वाले दिन ही हुई थी।

सिक्खों के लिए भी बसंत पंचमी का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसी मान्यता है कि बसंत पंचमी के दिन सिक्खों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी का विवाह हुआ था।

राजा भोज का जन्मदिन भी बसंत पंचमी के दिन ही मनाया जाता है। राजा भोज इस दिन एक बड़ा उत्सव करवाते थे। जिसमें पूरी प्रजा के लिए एक बड़ा प्रीतिभोज रखा जाता था जो चालीस दिन तक चलता था। वसंत पंचमी हिंदी साहित्य को अमर विभूति महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्मदिवस (28.02.1899) भी है। निराला जी के मन में निर्धनों के प्रति अपार प्रेम और पीड़ा थी। वे अपने पैसे और वस्त्र खुले मन से निर्धनों को बाँटा करते थे। इस कारण लोग उन्हें 'महाप्राण' कहते थे। इस दिन जन्में लोग यदि मेहनत करें तो बहुत आगे जाते हैं ।

नीति निपुण प्राणी अवसर के अनुकूल काम करता है, जहाँ दबना चाहिए वहां दब जाता है, जहाँ गरम होना चाहिए वहां गरम होता है, उसे मान-अपमान का हर्ष या दुःख नहीं होता उसकी दृष्टि निरंतर अपने लक्ष्य पर रहती है।

– प्रेमचंद

लघु कथा

निर्णय

प्रशांत कसौंधन
वरिष्ठ प्रबंधक
एमएसएमई सुलभ, गोवा

शुभदा जी को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि ये वही हैं, जो अपने घर के नुक्कड़ के पार्क को छोड़कर कहीं अकेले नहीं निकलती थी। घर के हर काम को सलीके से, शांति से बखूबी निपटाती चली जाती पर घर की चारदीवारी के बाहर कदम रखते ही उनका कलेजा धक-धक करने लगता।

पति अनूप जी के साथ ही बाहर निकलतीं पता नहीं कॉलेज वाली शुभदा शादी के बाद ससुराल की बंदिशों में ऐसी खोई कि वह अपनी पहचान को ही भूल गई। उन्हें किसी से कोई शिकायत भी नहीं थी। वे अपने बचे समय को अपने पठन-पाठन और संगीत के शौक को जीवंत करती रहतीं। समय धीरे-धीरे कब पंख लगाकर उड़ा कि पता ही न चला ।

अनुज जी रेलवे में ऑफिसर की पोस्ट में थे। वेतन से घर खर्च, बच्चों की पढ़ाई आराम से चल रही थी, दोनों मितव्ययी व स्वस्थ जीवन जीने के अभ्यस्त थे। अनुज जी ने नौकरी के कुछ सालों बाद ही माता-पिता के ना रहने पर गांव के पैतृक जमीन में कुछ और जमा पूंजी लगाकर दो प्लाट 35 X 50 के ले लिए थे। दोनों प्लाटों के बीच की दूरी 6-7 प्लॉट थे । रिटायरमेंट के पहले दोनों जमीन में बंगला बनवा और ऊपर सभी सुविधाओं से युक्त अटैच किचेन, लैट्रिन और बाथरूम, दो खुली बालकनी छोड़ दी थी, जिसमें 2 बच्चों का एक परिवार आराम से रह सके। अगर जरूरत पड़ी तो उन दोनों के रहने के लिए भी अच्छी रहेगी। बड़ी बालकनी से खुली हवा व धूप मिलती रहेगी साथ ही शुभदा का पौधा लगाने का शौक भी पूरा हो जायेगा। सीढ़ी बाहर से निकलवायी थी जिससे ऊपर रहने वाला बिना डिस्टर्ब किए बाहर से निकल जाए।

अनुज जी बहुत ही सुलझे व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी उम्र के पड़ाव में बहुत किस्से कहानियां सुन रखी थीं, उन्हीं से सबक लेकर उन्होंने अपने जीवनकाल मे ही बंगला के नीचे के हिस्से दोनो बेटों के नाम व ऊपर का हिस्सा अपने दोनों के नाम करवा लिया था। शुभदा अक्सर कहती क्या आप भी? मेरे बच्चे ऐसे नहीं हैं, क्या हम बच्चों से अलग रहेंगे? मैने ऐसा कब कहा शुभदे?

अनुज जी हंस कर कहते, तुम्हारे बच्चे ऐसे नहीं हैं पर शुभदा समय सब कुछ बदल देता है इंसान को केवल अपना भरोसा करना चाहिए। अंत में तो उन्हीं दोनों को सब कुछ मिलना है, कौन सा हम कहीं लिए जा रहे हैं?

पर, मैं नहीं चाहता कि मेरे न रहने पर तुम्हें कोई भी तकलीफ हो। मैं अपना फर्ज निभा रहा हूं। शुभदा उन्हें अश्रुपूरित आँखों से देखते हुए बोली, देखिएगा जी मैं ही आपके कंधो पर सवार होकर जाऊंगी। बात आई-गई, हो गई।

दोनों बेटों की शादी हो कर बच्चे भी हो गए थे बेटी अपनी ससुराल में खुश थी। सभी एक ही बंगला में खुशी-खुशी रह रहे थे। बड़े को दो बेटे व छोटे को एक बेटी थी। शुभदा और अनुज जी की प्रातः भ्रमण की दिनचर्या थी। अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो ही चुके थे। जो सब पहले छूट गया था दोनों मानो उसकी भरपाई कर लेना चाहते थे। बच्चों व अनुज जी के ऑफिस की भाग-दौड़ में अपने लिए जीने को कभी वक्त ही न मिला। पूरा जीवन सरकारी घरों मे ही गुजर गया था। उनका स्नेह देख पड़ोसियों को भी ईर्ष्या होती। शुभदा धीरे-धीरे कालेज टाइम की शुभदा होती जा रही थी। निश्चिंतता से एक अलग तरह का आत्मविश्वास व चेहरे में आभा नजर आती थी कुछ सुबह की जलवायु का असर तो कुछ अनुज जी के साथ मिलने का, दोनों का ही असर दिख रहा था।

घूमकर वापस आते समय ताजी सब्जियां लिए चले आते फिर दोनों लॉन में बैठकर या बालकनी के झूले में बैठ कर धूप सेंकते बात करते चाय पीते तो कभी साथ लाई मटर छीलने बैठ जाते। शुभदा झूले में साथ बैठने में संकोच करती पर वे हाथ पकड़ कर बैठा लेते क्या शुभदे जीवन हमारा है तो फिर लोग क्या कहेंगे इसकी चिंता क्यों करना?

वे दोनों ऊपर ही नहा-धोकर जब तक निवृत्त होते बहुएं नाश्ते के लिऐ आवाज लगातीं। नाश्ता कर शुभदा जी रसोई मे हाथ बंटाने लगतीं और अनुज जी बच्चों को छोड़ने स्कूल चले जाते। छोटी बहू ऑफिस जाती थी। बड़ी ने शादी के बाद बच्चे होने पर छोड़ दी थी। उन्होंने 1-2 बार काम के लिए कहा पर उसका मन न देख चुप हो गयीं। अनुज जी अपनी पेंशन का 40% घर खर्च में तो 60% बचत बैंक में डालते। पता नहीं कब कैसी जरूरत आ पड़े ।

कहते हैं न, सब दिन एक से नहीं होते, अचानक 2 दिन की बीमारी में चलते-फिरते अनुज जी चल बसे। शुभदा के लिए अप्रत्याशित था, पर कर भी क्या सकती थी रीति रिवाज तो सब यंत्रचालित सी पूरे करती गई मेहमानों के जाने के बाद वे 5-6 दिन तक अपने कमरे से बाहर ही न आई। जो बहुएं दे जाती ईश्वर का प्रसाद समझ खा लेतीं, रह-रहकर अनुज जी के कहे शब्द कानों में गूंजते तभी बड़े बेटे की आवाज से उनके विचार प्रवाह मे रोक लगी।

अम्मा जी आप इस तरह कब तक अकेले बैठी रहेंगी, आपके इस तरह करने से बाबू जी वापस तो न आ जाएंगे वे अपना दिल मजबूत कर बच्चों मे रहने की कोशिश करने लगीं। बामुश्किल 10-15 दिन बीतते ही छोटी-छोटी बातों को लेकर घर में महाभारत छिड़ जाती। उन्हें विश्वास ही न होता कि ये वही घर है जहां किसी की ऊंची आवाज न सुनाई पड़ती थी। वट वृक्ष के गिरते ही आश्रित लताएं अपनी-अपनी तरफ खिंचाव करने लगीं ।

अंत में शुभदा ने अनुज जी के कहे अनुसार छोटे को चाबी सौंप दी। घर स्नेह से है, ऐसे घर का भी क्या जहां आपस में 2 बोल स्नेह के न हों। अब बड़ी बहू ने माँ जी! कहकर एक प्रश्नवाचक नज़र उनकी तरफ डाली, शुभदा समझकर भी नासमझ बनी रही। तब बड़े ने छोटे को बुलाकर पूछा, अम्मा जी इस महीने तुम्हारे साथ जायेंगी या अगले महीने? आज एक बार मानो अनुज जी सामने खड़े हंस कर पूछ रहे थे अब क्या कहती हो शुभदे?

तुम से किसी ने पूछने की जरूरत भी नहीं समझी कि क्या चाहती हो? बोलो शुभदा मैं भी सुनना चाहता हूँ। वे स्वप्नलोक में खोई सी जागी बेटा मेरा निर्णय तुम्हें लेने की जरूरत नहीं, मैं कोई सामान नहीं तुमने एक बार भी पूछने की जरूरत न समझी। आप से क्या पूंछना अम्मा जी। नहीं बेटा मेरा निर्णय तो तुम्हारे बाबू जी ही कर गये थे। मैं अभी कुछ बात नहीं करना चाहती 2 दिन बाद मैं अपना निर्णय सुना दूंगी मैं किसके साथ जाना चाहती हूँ।

शुभदा रात मे बिना खाए-पिए ही लेटी रही एक बार बहू खाने को आवाज लगाई और फिर कुछ न बोली। उनका अन्तर्मन बार-बार

अनुज जी की बातों को दोहरा रहा था। उन्हें अपने बच्चों पर नाज था। इन्हीं के लिए वे अनुज जी से भी लड़ जाती थी। अनुज जी उनको बार-बार समझाते शुभदा इतना भी मोह ठीक नहीं होता कि तुम उस मोह के आवरण के पार भी ना देख सको। बच्चे कल अपनी गृहस्थी में रम जाएंगे अब वह जमाना नहीं रहा, तुम अपने को संभालो।

उन्हें हर बार अनुज जी ही गलत लगते थे, शुभदा को रात भर नींद नहीं आई, घड़ी में देखा तो सुबह के 5 बज रहे थे। शुभदा अपने मन को मजबूत कर तैयार हो वाकिंग शूज पहनकर टहलने को निकलने को हुई पर अचानक उसका मन बदल गया आकर बिस्तर पर लेट पिछली यादों में खो गई उसकी आँखों के सामने बार-बार अनुज जी का चेहरा सामने आ जाता। छोटी बहू खाना देकर गयी थी, अपने कमरे मे ही खा लिया था। एक बार उन्हें छोटी बहू से उम्मीद थी कि वह यही कहेंगी मां जी आप मेरे साथ रहेंगी, सोचने की क्या बात है । वह तो बस इतना बोलकर चली गयी मां जी कुछ चाहिए हो तो बताएगा जो मोह बाधक हो रहा था वह भी हट गया ।

एक निःश्वास छोड़ती खुद से बुदबुदाई चलो अच्छा ही हुआ ये झूठा भ्रम भी आखिर टूट गया। अनुज जी अक्षरशः सत्य थे मैं ही गलत थी कोई बात नहीं। शुभदा पूर्ण निर्णय लेकर नीचे गई और बड़े बेटे अमन से बोली बेटा! मैं किसी के साथ नहीं बल्कि अपने घर में रहूंगी, अपने घर? गाँव में अभी कोई और घर है क्या? न.न. यहीं, दोनों बंगले के ऊपर के खंड मेरे ही तो है। रजिस्ट्री की एक-एक प्रति तुम दोनों को भी तो बाबू जी ने दी थी न, उसकी ओरिजनल प्रति मेरे पास भी रखी है, देख लेना।

दोनों बेटों के तेवर बदल चुके थे दोनों बहुएं अपने साथ रहने की मिन्नते कर रहीं थी। अपनी ही माँ को दुनियाभर की ऊंच-नीच सिखाई जा रही थी। बेटी ने भी आकर समझाया, माँ, आपको अब इन सब झमेले क्यों पालने? जैसे भाई कह रहे हैं वैसा ही करिए आपको कल

को तो उनके ऊपर आश्रित होना ही पड़ेगा। उसने भी शायद दुनियादारी अच्छे से सीख ली थी। वही नहीं सीख पाई थी। बच्चों ने अनुज जी के जाते ही पूरी दुनियादारी 15 दिन में बरश्बी सिखा दी थी। अब कहने – सुनने को कुछ था भी नहीं।

अनुज जी ने दुनिया से ही सीख ली थी, वह अपने जीवनकाल में ऊपर के खंड में सभी व्यवस्था कर दिए थे। यही कहते जीवन में किसी का भरोसा नहीं कौन आगे कौन पीछे। उन्होंने छोटे बेटे शमन के बंगला के ऊपर के खंड को अनुज जी के मित्र संजय जी की मदद से कागजी कार्रवाई कर किराये पर चढ़ा दिया और खुद बड़े बेटे अमन के ऊपर के खंड में रह कर जरूरतमंद लड़के –लड़कियों की पढ़ाई में मदद के साथ–साथ आर्थिक मदद करने लगीं। मितव्ययी स्वभाव था ही पेन्शन, किराया बैंक की बचत से सभी कार्य सुचारु रूप से चल रहे थे । कुछ लड़कियों को सिलाई–कढ़ाई भी सिखाने लगीं। आर्थिक सहारे की जरूरत थी नहीं, बस निःस्वार्थ भाव से कर रही थीं ।

पहले तो लोगों ने बहुत उंगली उठाई कि पति के जाते आजाद हो गई पर अनुज जी का बताया रास्ता उन्होंने अपना लिया था लोगों का काम है कहना तो क्या हम जीना छोड़ देंगे? सच्चाई खुद बोलती है यदि हम गलत नहीं हैं तो कल बोलने वाले भी हमारे साथ खड़े होंगे। आने वाले कल के आश्रय की चिन्ता में बच्चों के पास वर्तमान व स्वाभिमान गिरवी रख दें। हमने अपने कर्तव्य पूर्ण निष्ठा व तत्परता से निभाए अब और नहीं अपने लिए भी जी लें।

वह बचत के पैसों से अनाथालय के बच्चों व वृद्धाश्रम जा–जाकर मदद करती साथ ही निराशा का दामन छुड़ा आगे बढ़ने का साहस जगाती। आज शुभदा को नववर्ष के उत्सव में जिलाधिकारी ने प्रकाश ज्योति के सम्मान से सम्मानित कर शाल, 51 हजार रुपये व प्रशस्तिपत्र प्रदान किया।

आज अचानक पड़ोसियों की नजरों में उसका कद ऊंचा हो गया था जो कभी आलोचना करते थे आज अपने बच्चों की आश्रितता में स्वाभिमान की रक्षा न कर सकने के कारण शुभदा से परामर्श करते रहते थे। आज हर शख्स उनका साथ देने को तैयार खड़ा था पर इस सबसे बेखबर शुभदा अनुज जी के अक्श को देख मुस्कुरा रही थी क्यों शुभदा मैं तो न सिखा पाया पर समयरूपी शिक्षक ने सब सिखा दिया। कहो कैसी रही उसकी आंखों से दो अश्रु बूंदें नीचे गिरती कि उसने पोंछ लिया काश अनुज जी की तरह हर पति अपनी पत्नी के बारे में सोचने वाला हो। आज आपकी दिशा ने नई राह दिखाई आपको मेरा कोटि–कोटि नमन।

सकारात्मक सोच

एक घर के पास काफी दिन से एक बड़ी इमारत का काम चल रहा था। वहां रोज मजदूरों के छोटे–छोटे बच्चे एक दूसरे की शर्ट पकड़कर रेल–रेल का खेल खेलते थे।

रोज कोई बच्चा इंजन बनता और बाकी बच्चे डिब्बे बनते थे...

इंजन और डिब्बे वाले बच्चे रोज बदल जाते,पर...

केवल चड्डी पहना एक छोटा बच्चा हाथ में रखा कपड़ा घुमाते हुए रोज गार्ड बनता था।

एक दिन मैंने देखा कि...

उन बच्चों को खेलते हुए रोज़ देखने वाले एक व्यक्ति ने कौतुहल से गार्ड बनने वाले बच्चे को पास बुलाकर पूछा....

बच्चे, तुम रोज़ गार्ड बनते हो। तुम्हें कभी इंजन, कभी डिब्बा बनने की इच्छा नहीं होती?

इस पर वो बच्चा बोला...

बाबूजी, मेरे पास पहनने के लिए कोई शर्ट नहीं है। तो मेरे पीछे वाले बच्चे मुझे कैसे पकड़ेंगे... और मेरे पीछे कौन खड़ा रहेगा....?

इसीलिए मैं रोज गार्ड बनकर ही खेल में हिस्सा लेता हूं।

ये बोलते समय मुझे उसकी आँखों में पानी दिखाई दिया।

आज वो बच्चा मुझे जीवन का एक बड़ा पाठ पढ़ा गया...

अपना जीवन कभी भी परिपूर्ण नहीं होता। उसमें कोई न कोई कमी जरुर रहेगी....

वो बच्चा माँ–बाप से गुस्सा होकर रोते हुए बैठ सकता था। परन्तु ऐसा न करते हुए उसने परिस्थितियों का समाधान ढूंढा।

यात्रा वृत्तांत

कर्नाटक के मलनाड क्षेत्र की यात्रा

प्रदीप
परि. अधकिारी (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, विजयपुर

केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान मणिपाल में प्रशिक्षण के दौरान रविवार (11 सितंबर) को मैं दोस्तों के साथ कर्नाटक के मलनाड या मलनाड क्षेत्र के भ्रमण पर गया। मलनाड क्षेत्र पश्चिम घाट पर्वत श्रृंखला के पश्चिम और पूर्वी घाट को कवर करता है, और लगभग 100 किलोमीटर चौड़ा क्षेत्र है। मलनाड क्षेत्र के अंतर्गत मुख्यत: कर्नाटक के 4 जिले शिवमोगा, चिकमंगलूर, कोडागु एंव हासन आते हैं। इसमें शिवमोगा जिले को मलनाड क्षेत्र का प्रवेश द्वार कहते हैं। हम इस रोमांचकारी यात्रा के लिए सुबह 8 बजे ट्रेवलर से निकले। हम कर्नाटक के उस मलनाड क्षेत्र की यात्रा कर रहे थे जो पहाड़ी क्षेत्र है और भारी बारिश की पेटी के अंतर्गत आता है, और हम लोग यहाँ छाता ले जाना भूल गए थे, लेकिन पूरी यात्रा इतनी रोमांचकारी थी कि हमें बारिश में भीगने का आभास नहीं हुआ। सर्वप्रथम हम लगभग 50 कि.मी. की यात्रा के बाद शिमोगा जिले के छोटे से गाँव अगुम्बे पहुंचे। इस गाँव को दक्षिण का चेरापूंजी कहा जाता है। यह वही गाँव है जिस पर 1985 के टेलीविजन धारावाहिक के कुछ ऐपिसोड फिल्माए गए थे, जिसके निर्माता शंकर नाग और आर. के. नारायण थे। यह प्रसिद्ध उपन्यास 'द मालगुडी डेज' पर अधारित था। यह गाँव समुद्र तल से 643 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, यह गाँव कुछ सुंदर झरनो, घने जगलों और नदियों का एक आदर्श घर है। इस पूरे क्षेत्र को अगुम्बे वर्षावन के नाम से भी जाना जाता है। इसके अंतर्गत कई स्थल आते हैं यहीं पर भारत का एकमात्र वर्षावन अनुसंधान केन्द्र भी है। अगुम्बे दक्षिण भारत के सबसे अनछुए और मंत्रमुग्ध कर देने वाले हिल स्टेशनों में से एक है। अगुम्बे वर्षावन के अंतर्गत आने वाले जिस क्षेत्र में हम गए वो थी कुंदाद्री पहाड़ी।

कुंदाद्री पहाड़ी

यह अगुम्बे से 16 किलोमीटर दूर है, जो घने सदाबहार जगलों से घिरी एक विशाल अखंड चट्टान है। कुंदाद्री पहाड़ी का नाम एक जैन धर्मग्रंथ कुंदकुंदाचार्य के नाम पर रखा गया है, जिनके बारे में कहा गया है कि उन्होंने वहाँ कठिन तपस्या की थी। कुंदाद्री पहाड़ी का लोकप्रिय आकर्षण पहाड़ी पर स्थित प्राचीन जैन मंदिर है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह 17 वीं शताब्दी का है और जैन तीर्थंकर को समर्पित है। मंदिर स्थल में चट्टानों से बने दो बेहद ही आकर्षक तालाब है। कुंदाद्री हिल पर्यटकों को बेहतरीन ट्रेंकिग ट्रेल्स और कैम्पिंग के अवसर प्रदान करती है। पहाड़ी से घने जगलों के बीच यह रास्ते चलते हैं और एक स्मरणीय प्राकृतिक अनुभव प्रदान करते हैं। कुंदाद्री की शांति बहुत ही आकर्षक है और इसके शिखर से आसपास के पहाड़ों का मनोरम सुरम्य दृश्य है। जब आसमान साफ और बादल रहित होते हैं, तो यह स्थान सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत दृश्य पेश करता है। लेकिन हम यहाँ पर 9 बजे पँहुचे उस समय यहाँ भारी धुंध थी व बारिश की वजह से अत्यधिक फिसलन थी। इस पहाड़ी से हम नजदीक की घाटी में धुंध से बनी श्वेत चादर को देख सकते थे, यह दृश्य अत्यधिक स्मरणीय था। लेकिन ज्यादा फिसलन की वजह से हम यहाँ अधिक देर तक नहीं रुके और इस सुंदर दृश्य के कुछ चित्र खींचकर हम यात्रा के अगले पड़ाव की ओर बढ़ गए।

श्रृंगेरी मठ

हमारी यात्रा का अगला पड़ाव था श्रृंगेरी मठ जो कुंदाद्री पहाड़ी से लगभग 25 किलोमीटर दूर था। जैसे-जैसे हम अगले पड़ाव की ओर बढ़ रहे थे मौसम खुलता जा रहा था लेकिन रिमझिम बारिश अब भी निरंतर हो रही थी। श्रृंगेरी मठ चिंकमगलूर जिले के श्रृंगेरी तालुका में स्थित है, जो तुंग नदी के तट पर बसा हुआ है। इसे श्रृंगेरी शारदा पीठ के नाम से भी जाना जाता है। मठ का अर्थ ऐसे संस्थानों से है जहां मठाधीश अपने शिष्यों को आध्यात्मिक शिक्षा, उपदेश देने का कार्य करते हैं, इन्हें पीठ भी कहा जाता है।

श्रृंगेरी मठ

ऐसा कहा जाता है कि यहाँ आदि गुरु शंकराचार्य ने कुछ दिन प्रवास किया था और इसी दौरान श्रृंगेरी मठ की स्थापना की। श्रृंगेरी पीठ भारत वर्ष में आदिगुरू शंकराचार्य द्वारा स्थापित हिंदू धर्म की 04 मठों(पीठों) (पूर्वी पीठ–गोवर्धन मठ (पुरी, उडीसा), पश्चिमी पीठ–शारदा मठ (द्वारकाधाम–गुजरात), उतरी पीठ–ज्योतिर्मठ (बद्रीनाथ–उतराखंड) और दक्षिणी पीठ–श्रृंगेरी मठ) में से एक है, और भारत में स्थापित प्रथम पीठ है, इसकी स्थापना आठवीं शताब्दी में की गई। यहाँ से शिक्षा ग्रहण करने वाले संन्यासियों के नाम के बाद सरस्वती,भारती तथा पुरी संप्रदाय नामक विशेषण लगाया जाता है। इस मठ को माँ सरस्वती का अधिवास माना जाता है। जिसका आभास मुझे मठ में प्रवेश करते समय ऐसा प्रतीत हुआ मानो मेरे मस्तिष्क के सारे स्नायु पुनर्जीवित हो रहे हैं। जैसा कि सनातन धर्म में मठों को धार्मिक शिक्षा के केन्द्र के साथ सम्पूर्ण चराचर जगत का आधार माना गया है। हालांकि इस मठ में कई सारे मंदिरों यथा विद्याशंकर मंदिर, श्री शारदाम्बा सन्निधि भी स्थित है। इस मठ में गोपुरम भी बना हुआ है जो सनातन संस्कृति का आधार है, गोपुरम एक स्मारकीय अट्टालिका होती है, यह प्राय: शिल्प से सज्जित होता है एंव अधिकतर दक्षिण भारत के मंदिरो के द्वार पर स्थित होता है। इन मंदिरों की अलौकिक चित्रकारी और यहाँ फैली असीम धार्मिक शांति के बीच हमें दोपहर होने का आभास भी नहीं हुआ। तभी हमें सूचित किया गया कि यहाँ भोजन का प्रबंध है, मैंने मठों के भोजन के बारे में एक रोचक बात सुनी थी कि मठों में भोजन नीचे बैठाकर पारम्परिक रूप से करवाया जाता है और इस भोजन में शरीर के लिए आवश्यक सभी तत्वों यथा कार्बोहाइड्रेटस, प्रोटीन, विटामिन इत्यादि का समावेश होता है। जैसे ही हमने भोजनालय में प्रवेश किया मुझे वही नजारा देखने को मिला जो मेरे अवचेतन मन में इंगित था। इतना स्वादिष्ट खाना खाकर हम मठ के प्रांगण में स्थित शॉप पर गए और वहाँ से माँ सरस्वती की फोटो व कुछ मठ की शिक्षाओं से संबंधित धार्मिक किताबें खरीदी और फिर हम यात्रा के अगले पड़ाव की ओर बढ़ गए जो था सिरीमाने जलप्रपात।

सिरीमाने जलप्रपात

यह श्रृंगेरी मठ से महज 22 कि.मी. दूर है। यह कर्नाटक राज्य के चिकमंगलूर जिले मे तुंग नदी की सहायक नदी पर स्थित एक छोटा सा जलप्रपात है, जो भारत के बड़े जलप्रपातों की श्रेणी में नहीं आता, इसकी ऊँचाई महज 40 फीट है और शायद इसलिए हम इसे नजदीक से देख सकते हैं। यह कहा जाता है कि प्रकृति में सर्वाधिक आकर्षण जलप्रपात में होता है जो इस जलप्रपात को देखने के बाद मुझे सर्वथा सत्य प्रतीत हो रहा था, क्योंकि जब हम यहाँ पहुँचे तब बारिश हो रही थी, लेकिन इस जलप्रपात की अविरल धारा को देखते हुए मैं इतना

सिरीमाने जलप्रपात

मशगूल हो गया कि मुझे बारिश का आभास भी नहीं हुआ और यहां कि प्राकृतिक छटा को निहारते हुए, मैं यही सोच रहा था कि प्रकृति के अनेकों रूप हैं और मलनाड क्षेत्र का यह इलाका प्रकृति के कई अलौकिक रूपों यथा पहाड़, नदियाँ व जलप्रपातों को एक साथ समेटे हुए है। करीब 3 घंटे प्रकृति की इस अलौकिक छटा का सूक्ष्म अवलोकन करने के बाद हमने यहाँ से प्रस्थान किया और तब तक शाम ढल चुकी थी, लेकिन अभी हमारी यात्रा का विस्मयकारी रोमांच बाकी था, जिसकी हमें भनक भी नहीं थी। करीब 45 कि.मी. की यात्रा के बाद हम अल्पाहार के लिए रूके और आसपास फैली प्राकृतिक हरियाली में सेल्फी लेने लगे। जैसे ही हमने यहाँ से प्रस्थान किया हममें से कुछ साथियों के जूतों से जोंक निकलने लगे। तभी ड्राईवर ने बताया कि वो इलाका जोंकों से प्रभावित है और उसके बाद तो यह रोमांच भय में बदल गया और संस्थान पहुंचने तक जोंकों का भय हम पर लगातार मंडराता रहा। हम अब यात्रा से तो वापिस आ चुके है लेकिन इस यात्रा की स्मृति हमारे मानस पटल पर आज भी इंगित है।

आलेख

तमिलनाडु में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन : चुनौतियाँ और समाधान

अक्षय भास्कर बाजपेयी
परि. अधिकारी (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय – तिरूच्ची

राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन अपने-आप में चुनौतीपूर्ण कार्य है, और जब इसे तमिलनाडु राज्य में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, अधीनस्थ निकायों, उपक्रमों आदि में लागू करने की बात आती है, तो राजभाषा-प्रभारी को मनोवैज्ञानिक स्तर पर तैयारी करनी पड़ती है। सबसे पहला प्रश्न यह खड़ा होता है कि तमिलनाडु राज्य में हिंदी की क्या आवश्यकता है? दूसरा प्रश्न यह है कि जब कार्यालयों का काम और विशेषकर बैंकों का काम बखूबी अंग्रेज़ी में चल रहा है, तो हिंदी में लिखा-पढ़ी क्यों की जाए? तीसरा और सबसे गुरुत्व पूर्ण सवाल यह कि जब राजभाषा नियम, 1976 तमिलनाडु राज्य पर लागू ही नहीं होता है, तो हिंदी में काम करने का आग्रह कितना औचित्यपूर्ण है?

इन सभी यक्ष प्रश्नों का उत्तर भारतीय संविधान में है। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी के विकास से संबंधित निर्देश दिए गये हैं। यहाँ स्पष्ट लिखा है –

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

अब प्रतिप्रश्न यह उठता है कि राजभाषा नियम, 1976 का विस्तार भले ही राज्य तक न हो, परंतु क्या संविधान भी राज्य पर अप्रभावी है? इसके अतिरिक्त राजभाषा अधिनियम, 1963, यथा संशोधित 1967 भी क्या राज्य पर लागू नहीं होता है? और फिर यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग की बात केंद्र सरकार अपने कार्यालयों के लिए कर रही है, न कि राज्य सरकार के कार्यालयों के लिए।

गौरतलब है कि संविधान के अनुच्छेद 345 में प्रादेशिक भाषाओं के अंगीकरण से संबंधित व्यवस्था दी गई है, जो इस प्रकार है –

किसी राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा।

संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार प्रत्येक शासन को अपने अधिकार क्षेत्र में अंगीकृत भाषा के प्रयोग की स्वतंत्रता है। इसी का अनुपालन करते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को केंद्र सरकार के अंतर्गत आने वाले सभी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग, प्रचार और विस्तार करने का दायित्व सौंपा गया है। इस दायित्व के सुनिश्चयन के लिए ही प्रत्येक कार्यालय-स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया जाता है, शहरी स्तर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अपने कुशल नेतृत्व द्वारा सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों को एक संयुक्त मंच प्रदान करती है और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी के प्रयोग से संबंधित निर्धारित लक्ष्यों की नियमित निगरानी करती है। इस प्रकार राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन संभव होता है।

तमिलनाडु में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा को लागू करने के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान कराने की है। जो कर्मचारी तमिलनाडु से इतर राज्यों से हैं, उन्हें तो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान अथवा भाषा में प्रवीणता प्राप्त है, परंतु प्रायः जिन लोगों ने तमिलनाडु राज्य में ही रहकर अपनी शिक्षा-दीक्षा पूरी की है और राज्य से बाहर की भाषाई समृद्धि से संपर्क का जिन्हें किसी कारणवश अवकाश नहीं मिल पाया है, उनके लिए हिंदी सीखना श्रमसाध्य कार्य साबित होता है। परंतु इस कार्य को सरल बनाने का कार्य प्रगत संगणन विकास केंद्र, पुणे द्वारा निर्मित

'लीला' एप्लिकेशन ने किया है। अधिगमकर्ता अपनी मातृभाषा की सहायता से हिंदी का ज्ञान अर्जित कर सकता है।

विदित हो, राजभाषा विभाग के अधीन कार्यरत केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान प्रति छमाही प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत परीक्षाओं का आयोजन करता है। इन परीक्षाओं के द्वारा कर्मचारी को राजभाषा हिंदी में दक्ष किया जाता है। तदुपरांत जिस कार्यालय में 80% से अधिक कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं, उन्हें राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है। अपना सारा आंतरिक कामकाज राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए यहाँ तक छूट दी गई है कि यदि कर्मचारी किसी अंग्रेज़ी के पारिभाषिक शब्द का हिंदी पर्याय नहीं जानता है, तो ऐसी स्थिति में वह उस अंग्रेज़ी शब्द विशेष का देवनागरी में लिप्यंतरण कर सकता है, बशर्ते वह हिंदी भाषा की वाक्य-संरचना का प्रयोग करे। साथ ही, गूगल इनपुट उपकरणों के माध्यम से अंग्रेज़ी का पूरा परिच्छेद हिंदी भाषा में अनूदित किया जा सकता है। ज्यादातर ऐसे अनुवाद, 80% तक सही होते हैं। मशीनी अनुवाद के पश्चात सिर्फ पुनरीक्षण की ही आवश्यकता पड़ती है। 'कंठस्य 2.0' इस दिशा में एक क्रांतिकारी प्रयास है।

राज्य में बैंकों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग सीमित स्तर पर होता है। बैंक का अधिकतम कामकाज अंग्रेज़ी में किया जाता है। फिर भी कार्यालय में नियमित रूप से दैनंदिन आधार पर जिन प्रपत्रों का इस्तेमाल होता है, उनका द्विभाषी प्रारूप हिंदी-प्रयोग की दिशा में महत्त्वपूर्ण शुरुआत है। इसके साथ ही ई-मेल के माध्यम से होने वाला प्रतिदिन का पत्राचार भी द्विभाषी रूप से किया जा सकता है। बैंकों में नियमित अंतराल पर आयोजित होने वाली बैठकों में भी हिंदी में संचालन एवं कार्यवृत्त-निर्माण आदि में हिंदी का प्रयोग राजभाषा के कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के सदृश है। कार्यालयों में कार्यक्रमों का संचालन हो अथवा किसी बैठक का आयोजन, उच्च प्रबंधन द्वारा अंग्रेज़ी को प्राथमिकता दी जाती है। राजभाषा हिंदी को लागू करने के मार्ग का एक बड़ा रोड़ा हिंदी के प्रति हीनताबोध है। स्वयं हिंदी भाषी इससे ग्रस्त हैं। राजभाषा हिंदी में काम करने से वे कन्नी काटते नज़र आते हैं। ऐसा नहीं है कि उन्हें हिंदी का कार्यालयी ज्ञान नहीं है, परंतु भावना ही कुछ ऐसी घर कर गयी है कि हिंदी में यदि ब्रह्मवाक्य भी कहा जाए, तो वह भी औचित्यहीन ही सिद्ध होगा।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग की दिशा में एक और सबसे बड़ा अवरोध इच्छाशक्ति का अभाव है। इच्छाशक्ति का यह अभाव शब्दजाल द्वारा आवृत्त रहता है। हिंदी नाटककार मोहन राकेश ने अपने कालजयी बीज नाटक 'रात बीतने तक' में रचना की प्रमुख स्त्री चरित्र 'सुंदरी' के माध्यम से व्यक्ति द्वारा आव्यूहित वाक जाल का उल्लेख किया है। महत्वाकांक्षी और राजदर्पोन्मत्त सुंदरी व्यक्ति-मन की मंशा को उघाड़ते हुए अपनी परिचारिका 'अलका' से कहती है –

"मनुष्य कितने सुंदर शब्दों की खाल में अपने अभावों को ढकने का प्रयत्न करता है। और तेरे जैसे भोले लोग, हर शब्द पर विश्वास कर लेते हैं।"

इस नाटक में दो जीवन-दृष्टियां संघर्षरत हैं। एक गौतम बुद्ध की निवृत्तिपरक दृष्टि और दूसरी सुंदरी की सांसारिक, प्रवृत्तिपरक दृष्टि। ठीक यही बात राजभाषा हिंदी को लागू करते वक्त भी दिखलायी देती है। एक ओर राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन का पुरजोर प्रयास है, तो दूसरी ओर इस प्रयास को धता बताने का भाव प्रयत्न और निरस्ति के इस द्वंद्वात्मक आलोक में राजभाषा का कार्य चलता रहता है।

राजभाषा का कार्य प्रभावी तरीके से चल सके, इसके लिए राजभाषा नियम, 1976 यह व्यवस्था देता है कि कार्यालय का प्रभारी राजभाषा संबंधी प्रावधानों के अनुपालन के लिए उत्तरदायी है। नियम संख्या 12 का पहला उपनियम कहता है –

"केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है।"

ऊपर जिस शब्दजाल का उल्लेख किया गया है, उसका इस्तेमाल इसी नियम के प्रति बरते गए अभाव की पूर्ति के लिए किया जाता है। परंतु यह प्रयास दूध-फेन के उबाल जैसा होता है। प्रश्नों की बौछार होते ही ठंडा पड़ जाता है।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि तमिलनाडु राज्य में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी को लागू करने का काम समवेत प्रयास, आपसी तालमेल और सतत निगरानी द्वारा बेहतर ढंग से किया जा सकता है।

कविता

खट्टा मीठा रिश्ता

रोचक दीक्षित
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, ग्वालियर

पिता पुत्र का नाता भी है बड़ा अजीब,
दूर लगते हैं पर होते हैं बेहद करीब,
नज़र आते हैं एक दूसरे में यह दोनों,
इस साथ को पानेवाले हैं खुशनसीब।

ख़ुशी और गर्व वह भी महसूस करते,
मगर पिता ज्यादा व्यक्त नहीं करते,
भले ही तारीफ़ कुछ ख़ास नहीं करते,
मदद करने में कभी पीछे नहीं हटते ।

अक्सर जब दुनिया से चले जाते हैं,
पिता समझ ही थोड़ा देर से आते हैं,
उदाहरण बन कर समय-समय पर,
पुत्र को भी एक श्रेष्ठ पिता बनाते हैं ।

लोग भी अजीब धारणाएं बनाते हैं,
कहते वह पुत्री को ज़्यादा चाहते हैं,
दिल जुड़े होते है पिता-पुत्र के भी,
मगर दोनों यह कहने से कतराते हैं ।

पिता का सपना पूरा करने के लिए,
पुत्र मेहनत करते, पसीना बहाते हैं,
बीमारी हो, गरीबी, या कोई मुसीबत
पुत्र परिवार का पिता बन जाते हैं ।

छुपाते पर भावुक वह भी हो जाते हैं
आँखों में उनकी आंसू छलक आते हैं,
याद करते जब पुत्र अपने पिता को,
बचपन की मीठी यादों में खो जाते हैं ।

एक उम्र बाद दोनों दोस्त बन जाते हैं,
टकराते हैं कभी, फिर एक हो जाते हैं,
इमली सा खट्टा मीठा है यह रिश्ता,
साथ मिल ज़िंदगी का स्वाद बढ़ाते हैं ।

पूजा तायल
लिपिक
क्षेत्रीय कार्यालय, बठिंडा

कविता

मेरी उड़ान

बंद कमरे में बैठ, देख खिड़की की ओर
सोचूँ, उड़ें कैसे पंछी गगन में,
खुद को पाकर क़ैद चार दिवारी
छटपटाहट सी उठी मेरे मन में।।

पंखों को फैलाए आसमान में
परिंदे कैसे भरें उड़ान,
मन मेरा करे संग उनके उड़ जाऊं
देखूं खुलकर पूरा आसमान।
पर देखा जब अपनी बाजुओं को
न पंख है न हौसला बुलंद,
पैरों में है नारी होने की बेड़ी
फिर कैसे उड़ूं बन कोई पतंग।

हर बेड़ी को तोड़
हर सोच को पीछे छोड़,
ले सांस खुली हवा में
आज़ादी से जीना चाहूं,
कर कोशिश जी जान से
नामुमकिन को मुमकिन मैं करना चाहूं।
निर्धारित कर एक लक्ष्य
अर्जुन बन मछली की आंख मैं भेदना चाहूं।
देख पंछी को उड़ते गगन में
उड़ान मैं भी भरना चाहूं।।

कर मेहनत इतनी खामोशी से
के सफलता शोर मचाए,
लेकर दुनिया मुट्ठी में उड़ूं आसमान में
कामयाबी के पंख फैलाए।।
भर मन में हिम्मत
सपने अपने सच कर दिखाऊं,
देख पंछी को उड़ते गगन में
उड़ान मैं भी भरना चाहूं।।

आलेख

हिंदी के सुयोग्य विद्वान फादर कामिल बुल्के

डी. बालकृष्ण
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

विदेशी विद्वानों के भारत से प्रभावित होने की लंबी परंपरा रही है, जिनमें कई चीनी, अरबी, फारसी ओर यूरोपीय यात्री शामिल हैं। ऐसे ही एक यात्री थे फादर कामिल बुल्के, जो भारत आए तो यहीं के हो गए और हिन्दी के लिए वह काम कर गए, जो शायद कोई हिन्दुस्तानी भी नहीं कर सकता था।

फादर कामिल बुल्के का जन्म बेल्जियम के पश्चिमी फ्लैंडर्स के रैम्सचैपल गांव में हुआ। उनके पास सिविल इंजीनीयरिंग में बीएससी की उपाधि थी जो उन्होंने लेवैन विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी। 1934 में उन्होंने भारत का संक्षिप्त दौरा किया और कुछ समय दार्जिलिंग में बिताया। उन्होंने गुमला (वर्तमान में झारखंड में) में 5 वर्ष तक गणित का अध्यापन किया। यहीं पर उनके मन में हिन्दी भाषा सीखने की ललक पैदा हो गई, जिसके लिए वे बाद में प्रसिद्ध हुए। उन्होंने लिखा है, मैं जब 1935 में भारत आया तो अचिंभित और दुखी हुआ। मैंने महसूस किया कि यहाँ पर बहुत से पढ़े-लिखे लोग भी अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति जागरुक नहीं है। यह भी देखा कि लोग अंग्रेजी बोलकर गर्व का अनुभव करते हैं। तब मैंने निश्चय किया कि आम लोगों की इस भाषा में महारत हासिल करुँगा। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से संस्कृत में परास्नातक की उपाधि हासिल की ।

फादर कामिल बुल्के ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1947 में हिंदी से एम.ए. किया तथा 'रामकथा उत्पति और विकास' विषय पर डी.फिल की उपाधि प्राप्त की । वे 1950 से 1977 तक संत जेवियर कॉलेज रांची में हिन्दी और संस्कृत के विभागाध्यक्ष रहें। उनकी हिन्दी अंग्रेजी की महत्वपूर्ण रचनाओं मे रामकथा और तुलसीदास मानस कौमुदी तथा ईसाई धार्मिक साहित्य दर्शन पर केन्द्रित ईसा जीवन और दर्शन एक ईसाई की आस्था उल्लेखनीय है। फादर कामिल बुल्के एक आस्थावान और गहरी प्रार्थना में डूबे साहित्य साधक थे ।

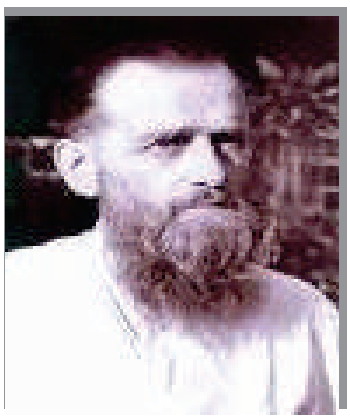

उन्होंने अंग्रेजी-हिंदी कोश का निर्माण किया जिसे पढ़कर अनेक लोगों ने हिंदी सीखी। आज भी अनेक कार्यालयों में इसी कोश की मदद से हिंदी का अनुवाद कार्य आसानी से किया जाता है । इस हिंदी पखवाड़े में हिंदी के रूप में इस अनन्य साधक का स्मरण करना जरूरी है। हिन्दी के जाने माने लेखक इलाचन्द्र जोशी ने कोश का महत्व स्वीकार करते हुए लिखा है कि यह कोश न केवल हिन्दी और अंग्रेजी के नए पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, वरन हम जैसे पुराने घिसे हुए लेखकों के लिए भी बड़े काम की चीज सिद्ध होगा । स्वयं मुझे अपने निबंध लेखन में इससे बड़ी सहायता मिली है ।

फादर कामिल बुल्के जैसे विदेशी हिन्दी विद्वानों के बारे में ही शायद तुलसीदास ने लिखा है **उपजहिं अनत, अनत छबि लहहीं** (उत्पन्न कहीं होते हैं, शोभा कहीं और पाते हैं) उनका जन्म भले ही पश्चिम में हुआ है पर उनका कर्मठ जीवन पूर्व के प्रीतिकर सम्मेलन तथा ईसाई और भारतीय परंपराओं के मैत्रीपूर्ण संवाद का प्रतीक है ।

फादर ने अपनी अभिव्यक्ति का मूल माध्यम हिंदी को ही बनाया था । अधिकांश सर्वोत्तम लेखन की भाषा हिन्दी है। उनकी विश्वप्रसिद्ध रचना (जो वर्षों के परिश्रम के बाद लिखी गई) रामकथा: उत्पत्ति और विकास (1950) के बारे में उनके गुरु और प्रसिद्द विद्वान डॉ धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है – यह ग्रंथ वास्तव में रामकथा संबंधी समस्त सामग्री है और इसे विश्वकोश कहा जा सकता है। वास्तव में यह खोजपूर्ण रचना अपने ढंग की पहली रचना है।

वे मृत्यु के कुछ महीने पहले तक बाइबिल के अनुवाद में लगे हुए थे । जून, 1982 में उनके दाहिने पैर की उंगली में गैंग्रीन हो गया । पहले रांची के मांडर और फिर पटना के कुर्जी मिशन अस्पताल में उनका इलाज हुआ। कुर्जी में ही गैंग्रीन उनके दाहिने पैर में इतनी तेजी से फैला कि मिशन के अधिकारी चिंतित हो उठे और उनको अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली में 8 अगस्त को भर्ती कराया। उन दिनों

एक ही पीड़ा उन्हें थी कि बाइबिल का अनुवाद अधूरा रह गया है। लेकिन मृत्यु की पदचाप भी सुनाई दे रही थी । उन्होंने 15 अगस्त 1982 को फादर प्रोविंशियल पास्कल तोचना से कहा –फादर, मैं ईश्वर की इच्छा संपूर्ण हृदय से ग्रहण करता हूँ और उनके पास जाने को तैयार हूँ। अब मुझे बाइबिल का अनुवाद पूरा करने की चिंता नहीं है। प्रभु बुलाते हैं, तो मैं प्रस्तुत हूँ ।''

17 अगस्त 1982 को सुबह 8 बजे उनका निधन हो गया और 18 अगस्त को दिल्ली के कश्मीरी गेट के निकॉलसन कब्रगाह में उनको दफनाया गया। रामकथा और तुलसी का एक अनन्य उपासक सदा को लिए सो गया।

1950 में भारतीय नागरिक होने के बाद उन्होंने तन, मन, धन से उस देश की सेवा की, जो उनकी मातृभूमि तो नहीं था, पर उनकी मातृभूमि से भी अधिक था। वे सब धर्मावलंबियों का आदर करते थे, सब धर्मावलंबी उनका आदर करते थे, वे सच्चे अर्थ में ईसाई थे, पर उन्हें अपने भारतीय होने पर भी गर्व था। भारतीय संस्कृति और भारतीय भाषाओं में वे गहरे रचे–बसे थे। एक विदेशी पौधा हमारी मिट्टी में आकर रच–बस गया था। उस वटवृक्ष में अपनी अनेक शाखाओं से सैकड़ों हिन्दी प्रोमियों को छाया दी ।

वे बिहार राष्ट्रभाषा पटना, नागरी प्रचारिणी सभा (वाराणसी) और प्राच्य विद्या सांस्थान (बड़ौदा) के आजीवन सदस्य थे। 1974 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया।

बलिष्ठ शरीर, गौरवपूर्ण और लंबी कदकाठी के स्वामी फादर दाढ़ी और सफेद चोंगे में भव्य लगते थे, पर उतने निरोगी कभी नहीं रहें। बचपन से उन्हें कम सुनाई पडता था। दमा और पोस्टिक अल्सर सहित कई बीमारियों से ग्रसित थे ।

वे भारतीयों से भी अधिक भारतीय थे। एक अवसर पर उन्होंने आलोचना पत्रिका में लिखा था, भगवान के प्रति धन्यवाद, जिसने मुझे भारत भेजा और भारत के प्रति धन्यवाद जिसने मुझे इतने प्रेम से अपनाया ।''

What is Man-in-The-Middle (MiTM) Attack?

मैन–इन–द–मिडिल (एमआईटीएम) हमला एक प्रकार का साइबर हमला है जिसमें हमलावर गुप्त रुप से दो पक्षों के बीच संदेशों को इंटरसेप्ट करता है और रिले करता है जो मानते हैं कि वे एक दूसरे के साथ सीधे संवाद कर रहे हैं।

एमआईटीएम हमलों के दौरान, साइबर अपराधी खुद को डेटा लेनदेन या ऑनलाइन संचार के बीच में डालते हैं। मैलवेयर के वितरण के माध्यम से, हमलावर उपयोगकर्ता के वेब ब्राउजर और लेनदेन के दौरान भेजे और प्राप्त किए जाने वाले डेटा तक आसान पहुंच प्राप्त करता है।

मैन–इन–द–मिडल अटैक एक प्रकार का ईव्सड्रॉपिंग अटैक है, जहां हमलावर किसी मौजूदा बातचीत या डेटा ट्रांसफर को बाधित करते हैं। यह एक हमलावर को किसी भी पक्ष से जानकारी और डेटा को बाधित करने में सक्षम बनाता है, साथ ही दोनों वैध प्रतिभागियों को दुर्भावनापूर्ण लिंक या अन्य जानकारी इस तरह से भेजता है जिसका पता तब तक नहीं चलता जब तक कि बहुत देर नहीं हो जाती। हमले का लक्ष्य व्यक्तिगत जानकारी, जैसे लॉगिन क्रेडेंशियल, खाता विवरण और क्रेडिट कार्ड नंबर चोरी करना है। किसी हमले के दौरान प्राप्त जानकारी का उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जिसमें पहचान की चोरी, अस्वीकृत फंड ट्रांसफर या अवैध पासवर्ड परिवर्तन शामिल हैं।

सुरक्षित कनेक्शन: एसएसएल (सिक्योर सॉकेट लेयर) तकनीक का उपयोग करके केवल सुरक्षित HTTP कनेक्शन वाली वेबसाइटों पर जाएं। इन साइटों की पहचान आसानी से हो जाती है क्योंकि URL https:// से शुरू होता है न कि http:// से। कई ब्राउज़र सुरक्षित साइट के संकेतक के रूप में URL फ़ील्ड में एक पैडलॉक आइकन भी दिखाते हैं।

सार्वजनिक नेटवर्क से बचें: सार्वजनिक नेटवर्क ऐसे नेटवर्क होते हैं जो उन सभी के लिए सुलभ होते हैं जो उन्हें एक्सेस करना चाहते हैं। विशेष रूप से वित्तीय खातों तक पहुंच के लिए सार्वजनिक नेटवर्क से बचें।

ब्राउज़रों के अद्यतन संस्करणों का उपयोग करें: इंटरनेट ब्राउज़रों के नवीनतम संस्करणों में अक्सर सुरक्षा अद्यतन शामिल होंगे जो MITM हमलों की संभावना को कम करेगा।

आलेख

एक होना है..... कुछ कर दिखाना है .....

अनिल गहलोत
सकल खिड़की परिचालक
एल.आई.सी. शाखा, जोधपुर

सबका साथ सबका विकास यह पंक्ति हमारे देश के प्रधानमंत्री की सकारात्मकता को दर्शाती है। इसी प्रकार हमारे बैंक की भी टैग लाईन है (TOGETHER WE CAN) जब हम एक हैं तो हम कुछ भी कर सकते हैं।

हाल में ही 28 अगस्त को भारत पाकिस्तान का टी 20 मैच मैं देख रहा था जिसे देख कर मुझे यह महसूस हुआ कि एक टीम वर्क हर क्षेत्र में कितना लाभदायक होता है किसी को भी कम नहीं आंका जा सकता पूरी टीम मिलकर ही अपने में पूर्ण होती है। यही बात उस मैच में भी दर्शाई गई क्योंकि जब बल्लेबाजों ने टीम इंडिया को जीत दिलाई तब यह अहसास हुआ कि कार्य आपसी प्रेरणा और मेलजोल से ही किया जा सकता है उसके लिए किसी भी कार्य को करने का जूनून और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का दृढ संकल्प होना चाहिए। ऐसे कई उदाहरण है जो हम अपने जीवन में देखते है और अगर उसका अनुसरण करें तो हम अपने और हमसे जुड़ी संस्था के लिए भी मील के पत्थर का काम कर सकते हैं।

जिस प्रकार हम सभी भली भांति जानते है कि आज बैंकिंग की स्थिति कितनी जटिल हो गई है । अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए हमें एक अंधी दौड़ में दौड़ना है और शायद यह समय की मांग भी है। जिससे हम मुंह नहीं फेर सकते।

वर्तमान में हमारे शीर्षस्थ कार्यपालकों का हमारे बैंक को ऊंचाईयों पर ले जाने का सपना है उस सपने को पूरा करने के लिए अटूट मेहनत व एकजुटता की आवश्यकता होती है चाहे चतुर्थ श्रेणी का व्यक्ति हो या सर्वोच्च पदाधिकारी सभी का अपना अपना महत्त्व और योगदान है उसे हम नकार नहीं सकते और एकजुटता जिसे हम टीम वर्क भी कह सकते है वर्त्तमान में उसकी आवश्यकता बहुत अधिक है और शायद इसी टीम वर्क का ही नतीजा था जब हमने बैंक ऑफ़ बड़ौदा को पछाड़ कर उसके स्थान पर हमारे बैंक का नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज किया था । आज हमारा मकसद इस विस्तार को बढ़ाकर पंजाब नैशनल बैंक के स्थान पर अपनी जगह बनाना है और जल्द इस सपने को पूरा करेंगे और कोशिश के लिए हमारे कार्य में विस्तार भी करेंगें।

जिस प्रकार मैंने बताया कि हमारा बैंक शीर्षस्थ रहना चाहता है इसके लिए ग्राहकों की संख्या में हमारे बैंक का हिस्सा होना चाहिए जिसके लिए सभी शाखाओं द्वारा अपने स्तर पर अभियान चलाया जाना चहिए हमारे क्षेत्रीय कार्यालय का निर्देश भी कुछ ऐसा ही था।

शाखा स्तर पर हुई बैठक के दौरान हमारे मैनेजर साहब ने इस बिषय में विचार विमर्श किया तो सभी से उनके विचार मांगे। मैंने अपने विचारों को रखते हुए सुझाव दिया कि हमारी शाखा में दो बड़े संस्थान के खाते है । अगर हम उनसे संपर्क करें और वहां कैम्प लगाए तो हमें काफी संख्या में खाते भी मिलेंगे और सैलरी खाते बढ़ने पर राशि भी काफी अच्छी मात्रा में आएगी जिससे हमारा डिपॉजिट भी बढ़ जाएगा। दूसरा खाता हमारे पास कॉलेज का था जिसे खोलने में भी फायदे थे और कॉलेज स्तर पर हम बच्चों के खाते भी खुलवा सकते हैं। जहाँ बच्चों में हमारा युवा वर्ग आता है अगर हम उनसे जुड़ेंगे तो बैंकिंग क्षेत्र से संबंधित अनेक सुविधाएं हम उन्हें प्रदान कर सकते है जिनमें शिक्षा ऋण प्रमुख है और आवश्यकता अनुसार व्यापार से संबंधित लोन, घर तथा कार इत्यादि ऐसी अनेक योजनाएं होती है जिससे उन्हें लाभ हो सकता है हम उनसे जुड़कर ही दे सकते है। एक व्यक्ति विशेष से जुड़कर हम एक परिवार से जुड़ सकते है तथा उस परिवार को बैंकिंग संबंधित योजनाएं प्रदान की जा सकती है । इन सभी बातों पर विचार करके हमने दो टीम बनाई। वैसे तो हमारी शाखा में कुल 5 सदस्य है मगर फिर भी हमने 2-2 के ग्रुप में दो टीम बनाई । जिनमें से एक सरकारी संस्थान से बात करने जाएगी और दूसरी कॉलेज में जाएगी जिसके लिए समय का निर्धारण भी किया गया । जिस प्रकार कॉलेज का समय सुबह का ही होता है इसलिए कॉलेज जाने के लिए लंच से पहले का समय तथा सरकारी संस्थान में जाने का समय लंच के बाद का निर्धारित किया गया। जिससे कि शाखा में भी कार्य का संचालन आसानी से किया जा सके।

अब, जब हमने अपनी योजना पर कार्य करना शुरू किया तो जैसा कि हम जानते है कि आसान कुछ भी नहीं होता जहां वे कर्मचारी जिस बैंक से इतने समय से जुड़े हुए है उसे अचानक छोड़कर हमारी बैंक से जुड़ना इतना आसान नहीं था और ना ही कुछ अलग था जिससे हम उन्हें आकर्षित कर सकें मगर केवल व्यवहार कुशलता के आधार पर ही हम उन्हें अपने बैंक से जोड़ने का प्रयास कर सकते है। आप अपने सैलरी खाते नहीं बदल सकते तो अपने परिवार के सदस्यों के खाते खुलवा सकते है इस बात पर वे तैयार हो गए । इस प्रकार वहां से हमें लगभग 10 खाते मिले और बाकी के फॉर्म हम उन्हें देकर आए जिसको पूरा करके वे 1-2 दिन में बैंक में जमा करवाने के लिए कहा।

दूसरी तरफ दूसरी टीम कॉलेज गई जहां की स्थिति ऐसी थी कि वहां के स्टाफ बैंक बदलने के लिए तैयार नहीं थे तो हमारे स्टाफ ने स्कूल के बच्चों के खातों के लिए बात की उन्हें इस बात को लेकर कोइ परेशानी नहीं थी तो हमारी टीम ने क्लास में जाकर बच्चों के सामने हमारे बैंक के अनेक उत्पादों के बारे में जानकारी प्रदान की। साथ ही आज का युवा जहां कैशलेस काम करना पसंद करता है इसके लिए हमारे स्टाफ ने उन्हें हमारे बैंक के AI1 के बारे में जानकारी दी जिसको सुनकर वे सभी प्रभावित हुए फिर हमारी टीम ने स्टूडेंट्स खाते खोलने के लिए सुझाव दिया सभी बच्चे तैयार भी हो गए। हमने उन सभी को फॉर्म उपलब्ध करवाएं, कुछ बच्चों के पास उनके आई डी प्रूफ थे तो

उन्होंने फॉर्म भरकर दे दिए बाकी ने जल्दी ही फॉर्म बैंक में लाने के लिए कहा उस दिन हमारी टीम को 15 खाते मिले और शायद इससे कहीं ज्यादा होंगे। शुरूआत अच्छी रही और इससे हमें एक दिशा मिल गई कि किस तरह हम अपने कार्य को सिद्ध कर सकते हैं । उसके पश्चात हमने अपने लक्ष्य को भी पूरा कर लिया तथा धीरे-धीरे ग्राहकों का जुड़ना इसी प्रकार जारी रहा और हम अपनी कसौटी पर खरे उतरें।

इस प्रकार अगली शाखा बैठक में हम सभी के चहरे पर मुस्कान थी साथ ही साथ जो हमने पाया उस पर हम सभी को गर्व भी था ।

डिजिटल रुपया

डिजिटल रुपया या ई-रुपया एक टोकनयुक्त डिजिटल संस्करण है जो बैंक द्वारा जारी की गई एक कानूनी निविदा है और कागजी मुद्रा का डिजिटल रूप है या यूं कह सकते हैं कि यह सोवरन करेंसी का एक इलेक्ट्रॉनिक रूप है। डिजिटल रुपया (सीबीडीसी) को जनवरी 2017 में प्रस्तावित किया गया था और इसे वित्तीय वर्ष 2022-23 में जारी किया गया। भारतीय रिज़र्व बैंक की डिजिटल मुद्रा का रिटेल पायलट 1 दिसंबर 2022 को लाइव हो गया है। भारतीय रिज़र्व बैंक का मानना है कि रिटेल डिजिटल रुपया भुगतान और निपटान के लिए सुरक्षित धन तक पहुंच प्रदान कर सकता है, क्योंकि यह केंद्रीय बैंक की प्रत्यक्ष देनदारी है। सीधे शब्दों में कहें तो रिटेल सीबीडीसी मुख्य रूप से रिटेल लेनदेन के लिए नकदी का एक इलेक्ट्रॉनिक संस्करण है। सीबीडीसी जिसे रिटेल डिजिटल रुपया या ई-रुपया के रूप में भी जाना जाता है। वर्तमान में चल रही करेंसी के बराबर है, या फिर यूं समझें कि यह एक डिजिटल टोकन के रूप में होगा जो लीगल टेंडर का प्रतिनिधित्व करता है। यह उसी मूल्यवर्ग में जारी किया जाएगा जैसे वर्तमान में कागजी मुद्रा और सिक्के जारी किए जाते हैं। देशभर के चार शहरों में डिजिटल रुपये के रिटेल पायलट में चरणबद्ध भागीदारी के लिए आठ बैंकों को चुना गया है। पहले चरण में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, आईसीआईसीआई बैंक, यस बैंक और आईडीएफसी फर्स्ट बैंक सहित चार बैंक पायलट लॉन्च में हिस्सा ले रहे हैं। चार अन्य बैंक जैसे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा, एचडीएफसी बैंक और कोटक महिंद्रा बैंक बाद में इस पायलट में शामिल होंगे। पायलट कार्यक्रम शुरू में चार शहरों मुंबई, नई दिल्ली, बेंगलुरु और भुवनेश्वर को कवर करेगा। बाद में इसका विस्तार अहमदाबाद, गंगटोक, गुवाहाटी, हैदराबाद, इंदौर, कोच्चि, लखनऊ, पटना और शिमला तक होगा।

आलेख

मैं कौन हूँ?

एल. रामाकृष्ण
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, हैदराबाद

हम वो हैं जो हम सोचते हैं और हम क्या सोचते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम कौन/क्या हैं? हममें से कोई भी एक जैसा नहीं सोचता हालांकि हम एक जैसी स्थिति में हैं। हर किसी के अपने कार्य करने का अपना कारण होता है। हम कितने अनोखे हैं ?

न केवल हम एक-दूसरे की राय से अलग होते हैं बल्कि हम समय-समय पर अपनी राय से भी अलग रहते हैं। इसका मतलब है कि हमारे सभी फैसले समय पर निर्भर करते हैं। हम अपने विचारों के आधार पर कार्य करते हैं, जो अपने आप में निराधार है।

हमारे व्यवहार को हमारी आनुवंशिकता (कर्म) और पर्यावरण (फ्रीविल) (FREEWILL) द्वारा आकार दिया जाता है।

हम जो बोएंगे वही काटेंगे यह हमारा कर्म है।

दी गई स्थिति में हम जो करते हैं वह हमारी स्वतंत्रता है ।

फ्रीविल हमारे कर्म का बीज है।

जिस तरह एक शिशु हाथी अपनी परिपक्वता प्राप्त करने के बाद भी एक छोटी सी रस्सी से खुद को मुक्त करने की उम्मीद छोड़ देता है, उसी तरह क्या हम इंसान अपने समाज द्वारा हमारे अंदर डाले गए डर से अपनी क्षमता को सीमित कर लेते हैं। एक हाथी को खुद को आज़ाद करने के लिए रस्सी से मुक्त होने के लिए कुछ बल लगाने की ज़रूरत होती है, जो वह कभी नहीं करता है क्योंकि उसने अपने बचपन में अपनी आशा खो दी थी । लेकिन हम इंसानों को अपनी वास्तविक क्षमता का विश्लेषण करने, समझने और महसूस करने के लिए इस अद्भुत मस्तिष्क का उपहार मिला है। फिर भी अधिकांश मामलों में हम ऐसा करने में विफल रहते हैं, क्यों?

ऐसा इसलिए है, क्योंकि हम हमेशा समाधान के लिए बाहर की ओर देखते हैं । ऐसा करने में समस्या यह है कि हम भ्रम की दुनिया में खो जाते हैं क्योंकि मानव जाति ने अपने दिमाग को भौतिकवाद के लिए गिरवी रख दिया है। भौतिकवाद और कुछ नहीं बल्कि हमारे अहंकारी मन द्वारा हमें उसका गुलाम बनाने के लिए बनाई गई आभासी वास्तविकता है। जिसके फलस्वरूप संकीर्ण मानसिकता के कारण हम यथार्थ के प्रति एक निकट दृष्टि विकसित करने लगते हैं। यह असुरक्षा की भावना पैदा करना शुरू कर देता है और हमारे साथी प्राणियों से लगातार खतरा पैदा करता है। परिणाम स्वरूप हम शक्की होने लगते हैं और समाज से खुद को अलग-थलग करने लगते हैं । मैं और वो की एक मजबूत भावना सामने आने लगती है और हम पहचान की भावना प्राप्त करने के लिए धार्मिक, राजनीतिक या राष्ट्रवादी विचारधारा पर आधारित कुछ समूहों के साथ खुद को जोड़ने की कोशिश करते हैं।

एक बार जब हम भेदभाव के माध्यम से खुद को अलग-थलग कर लेते हैं तो हम झूठी श्रेष्ठता के आधार पर अपनी पहचान को सुरक्षित रखने के लिए लड़ना शुरू कर देते हैं। इस तरह हम धीरे-धीरे अपनी सोचने-समझने की क्षमता को कम करते जाते हैं और खुद को नकारात्मकता, घृणा और लाचारी की अपनी ही बातों में कैद कर लेते हैं । हमारा अहंकार हमें एक व्यक्ति के रूप में पहचान, प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता की झूठी भावना देकर अलग-थलग कर देता है, जिससे हम वास्तविकता के संपर्क में आ जाते हैं। अत्यधिक मामलों में ऑब्सेसिव कंपल्सिव बिहेवियर के शिकार होते हैं और खुद के साथ शांति से नहीं रहते हैं और अपनी कमियों के लिए दूसरों को दोष देना शुरू कर देते हैं। वे अपना और उनसे जुड़े लोगों का भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जीवन दयनीय बना देते हैं। वे अपने जीवन के मालिक नहीं हैं क्योंकि वे अपने स्वयं के अहं के शिकार बन जाते हैं।

दूसरी ओर, अगर हम अपने भीतर देखना सीखते हैं तो हम दयालु बन जाते हैं। दूसरों के लिए हमारा प्यार और चिंता सार्वभौमिक हो जाती है। यह सिर्फ आध्यात्मिक होना ही नहीं बल्कि यथार्थवादी होना भी है। जैसे-जैसे हम अपने भीतर देखते हैं, वैसे-वैसे हमारे विचार,

सोचने की क्षमता विस्तृत होती जाती है। हम अपनी अहं आधारित पहचान से मुक्त हो सकते हैं।

युक्ति है : ध्यान करना। जैसे ही हम ध्यान करना शुरू करते हैं, हम अपने विचारों के साक्षी बन जाते हैं। अधिकांश लोग विचारों से भयभीत हो जाते हैं और ध्यान करना छोड़ देते हैं। लेकिन ये विचार हमेशा हमारे दिमाग में बिना किसी निगरानी के चलते रहते हैं। जिस क्षण हम ध्यान करते हैं, वे बढ़ जाते हैं और हमारा अहंकार उजागर होने लगता है। तो यह रक्षा तंत्र के उपयोग से हमारे ध्यान को बाधित करने की कोशिश करता है और हमें कई यादृच्छिक विचारों से गंदगी में विश्वास दिलाने की कोशिश करता है जिसे हम समझ नहीं पाएंगे और अंत में ध्यान छोड़ देंगे।

चूंकि हम अपने अहंकार के शिकार हैं, यह हमें ध्यान करने की अनुमति नहीं देगा। मन को वश में करना इतना आसान नहीं है जैसा कि मन के बारे में कहा जाता है, मन एक बंदर की तरह है, जो शराब में डूबा हुआ है, एक बिच्छू द्वारा काटा गया है और एक राक्षस द्वारा ग्रसित है। ध्यान हमारे मन को प्रशिक्षित करने का एक साधन है।

जैसे–जैसे हम अपनी सांस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, हमारे विचारों की तीव्रता बढ़ती जाती है और हमारा मन अशांत हो जाता है। हमें अपने विचारों से पीछे हटना सीखना चाहिए। शांत और रचित रहें और उन्हें एक बाहरी व्यक्ति के रूप में देखें न कि उस व्यक्ति के रूप में जो उनके साथ पहचाना जाता है।

जिस क्षण हम अपने विचारों से मुक्त होने में सक्षम होते हैं, हमारे और हमारे विचारों के बीच एक खाई बन जाती है और वह है हमारे अहंकार का विराम बिंदु। हम अपने और अपने विचारों के बीच स्पष्ट रूप से अंतर करने में सक्षम होंगे। जिस क्षण ऐसा होता है हम अपने विचारों पर मुस्कुराना शुरू कर देते हैं, क्योंकि वे अब हमारे पास नहीं हैं। हमारे विचार नग्न हो जाते हैं और हमसे दूर भागते हैं और अब हमारे दिमाग को शिकार के रूप में इस्तेमाल नहीं करते हैं।

लेकिन यह कुछ समय के लिए ही रहता है। जिस क्षण हमारा ध्यान समाप्त हो जाता है, उसी क्षण हमारा अहंकार दोगुनी शक्ति के साथ वापस आ जाता है। इसलिए हमें अपने विचारों के प्रति निरंतर सतर्क रहना चाहिए। जब हम सतर्क हो जाते हैं और अपने विचारों पर मुस्कुराना शुरू कर देते हैं, तो हमारे अहंकार के पास हमें अलविदा कहने और एक नया शिकार खोजने के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता हैं। अहंकार इतना शक्तिशाली है और हम इसके साथ इतने अधिक जुड़े हुए हैं कि हमें पता ही नहीं चलता कि यह हमारे ऊपर हावी है। इसलिए हमें हर समय अपने मन पर नजर रखनी चाहिए और यहीं ध्यान की भूमिका होती है।

किसी चीज की प्रत्याशा में ध्यान नहीं करना चाहिए। यह आपके साथ एक प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में होना चाहिए।

ध्यान हमारे अहंकार को धीमी मौत देता है।

यह हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

यह हमारे भय और संदेह को चकनाचूर कर देता है और विश्वास और को आत्मसात कर लेता है।

यह हमारे अंदर मैं की श्रवना को मारता है और हमें हम की भावना देता है ।

यह हमारे श्रेष्ठता परिसर और अहंकार को सरलता और विनम्रता से बदल देता है।

यह नफरत को प्यार में बदल देता है।

ध्यान के साथ, हम वही बनते हैं जो हम वास्तव में हैं अर्थात प्रेम, आनंद और करुणा।

इसलिए, यह हम पर निर्भर है कि हम क्या बनना चाहते हैं अर्थात हम अपने अहंकार के अधीन होना चाहते हैं, या इससे मुक्त होना चाहते हैं। मैं वही हूं, जो बनना चाहता हूं ।

जब तक हम किसी काम को शुरु नहीं करते तब तक वह नामुमकिन ही लगता है।
– नेल्सन मंडेला

कविता

मिट्टी से जुड़ी जड़

सोनी चौबे
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना-1

कट कर अपनी जड़ों से हम टूट जाते हैं,
बिखर जाते हैं, आ जाते हैं धरा पर।

फिर हम बन जाते हैं बस एक वस्तु,
और मिट जाता है अस्तित्व।

जड़ ही बताती है, कि हम चेतन हैं।
हमारी स्वांस सिर्फ वायु नहीं, ये संकेत है
जीवन का, उससे जुड़े स्पंदन का ।
वरना तो अर्थहीन है सबकुछ,

जीना भी आगे बढ़ना भी,
और बस सांस लेना भी

उड़ान न रोको पर जुड़े रहो जड़ से,
वरना सज जाओगे, कभी मेज के तौर पर
तो कभी चिता की समिधा बन कर।

आदित्य पाल
वरिष्ठ प्रबंधक
मंझनपुर शाखा

कविता

साहस से सफलता

लाख जीवन घिरा हो अभाव से,
उसे पूर्ण करो तुम अपने प्रभाव से ।

है साहस मन में अगर, कुछ न अधूरा है,
तन्मयता से जुटो तो सब कार्य ही पूरा है ।

कुछ कठिनाइयां, चुनौतियां मन को निढाल करेंगी,
पर स्वयं का साहस, मन की चेतना ही ढाल बनेंगी ।

विफलता का अनुभव भी ऊर्जा का प्रारूप बनेगा,
जीवन का एक सफल-सुफल आधार स्वरूप बनेगा ।

तो साहस के परों से उड़ान भर के गगन घूम लो,
आत्म-विश्वास के स्तंभ से सफलता के कदम चूम लो ।

ये विश्वास तुम्हारा अपना है, ये जीवन सिर्फ तुम्हारा है,
सतत भाव से प्रयत्न करो, साहस ही मात्र सहारा है ।

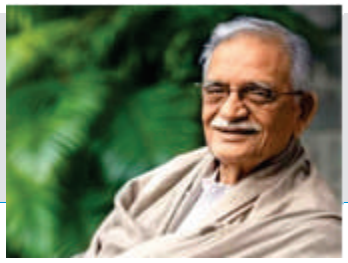

अपने साए से चौंक जाते हैं..!
उम्र गुज़री है इस क़दर तन्हा..!!

गुलज़ार

लघु कथा

एक छोटी सी मरम्मत

दीपक कुमार
एकल खिड़की परिचालक
क्षेत्रीय कार्यालय, मध्य दिल्ली

एक आदमी ने एक पेंटर को बुलाया और अपनी नाव दिखाकर कहा कि इसे रंग दो। पेंटर ने उस नाव को लाल रंग से रंग दिया, जैसा कि नाव का मालिक चाहता था। फिर पेंटर ने अपने पैसे लिए और चला गया।

अगले दिन पेंटर के घर पर वह नाव का मालिक फिर पहुंचा और उसने एक बहुत बड़ी धनराशि का चेक उस पेंटर को दिया। पेंटर यह देखकर हैरान रह गया और पूछा– ये इतने सारे पैसे किस बात के हैं? मेरे पैसे तो आपने कल ही दे दिये थे।

मालिक ने समझाते हुए कहा – भाई, ये रंगाई का पैसा नहीं है, बल्कि ये उस नाव में जो छेद था, उसकी मरम्मत करने का पैसा है।

तब पेंटर ने कहा – अरे साहब, वो तो एक छोटा सा मामूली छेद था। उस छोटे से छेद की मरम्मत करने के लिए इतना सारा पैसा मुझे ठीक नहीं लग रहा है।

नाव के मालिक ने विनम्रता से कहा– दोस्त, तुम्हें शायद पूरी बात पता नहीं है। मैं तुम्हें विस्तार से बताता हूँ। जब मैंने तुम्हें नाव रंगने के लिए कहा था, तो जल्दबाज़ी में, मैं तुम्हें ये बताना भूल गया था नाव में एक छेद भी है, जिसको ठीक करवाना है। पेंट होने के बाद जब रंग सूख गया, तो मेरे दोनों बच्चे उस नाव को लेकर समुद्र में नौकायन के लिए निकल गए। उस वक्त मैं घर पर नहीं था, लेकिन जब लौटकर आया और अपनी पत्नी से ये सुना कि बच्चे नाव लेकर समुद्र में गए हैं, तो मैं बदहवास हो गया, क्योंकि मुझे याद आया कि नाव में तो छेद है।

मैं गिरता पड़ता उस तरफ भागा, जिधर मेरे बच्चे गए थे। लेकिन थोड़ी दूर पर मुझे मेरे बच्चे दिख गए जो सकुशल घर वापस आ रहे थे। फिर मैंने छेद चेक किया तो पता चला कि मुझे बिना बताए तुम उस छेद की मरम्मत कर चुके थे। तो मेरे दोस्त, उस महान कार्य के लिए ये पैसे बहुत ही कम हैं। मेरी औकात नहीं है कि तुम्हारे इस अहसान की उचित कीमत अदा कर सकूँ। जीवन में 'भलाई का कार्य' जब मौका मिले तभी कर देना, भले ही वह बहुत साधारण कार्य ही क्यों ना हो। क्योंकि कभी–कभी वो छोटा सा कार्य भी किसी के लिए बहुत अमूल्य साबित हो सकता है। मेरी तरफ से उन सभी को धन्यवाद, जिन्होंने हमारी जिंदगी की नाव की कभी भी मरम्मत की है, उन्हें तहे दिल से शुक्रिया और हम सदैव प्रयत्नशील रहें और दूसरों की नाव मरम्मत करने के लिए हमेशा तत्पर रहें।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
– भारतेंदु हरिश्चंद

लघु कथा

आचार विचार

प्रमोद रंजन
अधिकारी
महराजगंज, सिवान

एक प्रकाश नाम का लड़का था, जिसे बाहर का खाना खाने का बहुत शौक था। वह हमेशा बाहर का खाना पसंद करता था। प्रकाश की मम्मी उसे बहुत समझाती थी, लेकिन वह उनकी एक बात नहीं सुनता था। एक दिन प्रकाश स्कूल से घर आया और बोला मम्मी मुझे बहुत तेज भूख लगी है, उसकी मम्मी ने कहा मैं तुम्हारे लिए राजमा चावल बना देती हूँ, प्रकाश ने कहा मुझे राज़मा चावल नहीं खाना है। उसकी मम्मी ने उसे फल खाने के लिए कहा, लेकिन प्रकाश ने कहा मुझे बर्गर और कोल्डड्रिंक चाहिए।

प्रकाश की मम्मी ने कहा यह तो घर में नहीं है। इस बात को सुनकर प्रकाश ने कहा मुझे पैसे दो, मैं बाहर से लेकर आता हूँ। प्रकाश ने जिद करके अपनी मम्मी से पैसे लिए और बाहर चला गया। उसी रात को प्रकाश की माँ ने पराठे और आलू गोभी की सब्जी बनायी थी। रात को प्रकाश और उसके मम्मी पापा तीनों खाना खाने के लिए बैठे, प्रकाश ने कहा पापा मुझे गोभी की सब्जी पसंद नहीं है। इस पर उसके पापा ने डाँटते हुए कहा, कि तुम्हारे लिए रात में बाहर से खाना थोड़ी लाएंगे, चुपचाप खा लो।

लेकिन प्रकाश का मन चिप्स और आइसक्रीम आदि खाने का कर रहा था। उससे खाना बिल्कुल भी नहीं खाया जा रहा था। उसने अपने मम्मी – पापा की नज़र से बचकर सारा खाना पास में रखे फूलदान में डाल दिया और अपने कमरे में जा कर सो गया। अगली सुबह प्रकाश स्कूल के लिए तैयार हो जाता है। प्रकाश की मम्मी ने उसे दूध पीने के लिए दिया। लेकिन प्रकाश ने अपनी माँ से कहा कि उसे दूध पसंद नहीं है और वह दूध नहीं पिएगा।

तभी प्रकाश के पापा वहां आ गए और उसने अपने पापा के डर की वजह से दूध का गिलास मम्मी के हाथ से ले लिया। लेकिन उसने वह दूध पीया नहीं और नजर बचाकर खिड़की से बाहर सारा गिलास का दूध गिरा दिया और फिर स्कूल चला गया। जब प्रकाश की मम्मी घर की सफाई कर रही थी, तो उन्हें फूलदान में रात की सब्जी और पराठे मिले। प्रकाश के पिता जो कि बैंक में कार्यरत थे, अपने काम पे जाने वाले थे, वो वहां आए और उन्होंने प्रकाश की मम्मी से कहा कि तुम्हारे लाडले बेटे ने सारा दूध सुबह खिड़की से बाहर फेक दिया था, और देखो मेरे जूते और मोजे पर भी दूध लग गया है। आज भी बाहर ऐसे बहुत से बच्चे है, जिन्हे दूध देखने को भी नहीं मिलता है और हम अपने बेटे को सब कुछ देते हैं, लेकिन फिर भी इसे इन सब चीजों की कोई क़दर नहीं है। प्रकाश की मम्मी ने कहा कि इसने रात सारा खाना फूलदान में फेक दिया था। यह घर का खाना बिल्कुल भी नहीं खाता है, और इसकी सेहत भी दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। प्रकाश के पापा बोले जब खाना ही ठीक से नहीं खाएगा तो सेहत कहाँ से बनेगी।

प्रकाश की मम्मी ने कहा कि इसी वजह से प्रकाश अपनी क्लास में इतना कमजोर है। पौष्टिक आहार न खाने की वजह से चेहरे पर कोई प्रकाश नहीं है और खेल कूद में भी दूसरे बच्चों से बहुत ज्यादा कमजोर है। अब आप ही कुछ कीजिये।

शाम को जब वह बैंक की नौकरी से वापस आए तो उन्हें एक तरकीब सूझी। यह तरकीब उन्होंने प्रकाश की माँ को बता दी। अगले दिन प्रकाश का जन्मदिन था। प्रकाश को आज पूरे दिन कुछ भी खाने की पूरी छूट थी। उसने पूरे दिन बहुत सी बाहर की चीजे खायी। बाद में प्रकाश के माता पिता ने प्रकाश को गिफ्ट में एक पौधा दिया और कहा कि यह बहुत अनमोल पौधा है। यह जिसके पास रहता है, उसके पास किसी भी चीज की कमी नहीं होती है। तुम इस पौधे का पूरा ख्याल रखोगे। प्रकाश को वह पौधा बहुत पसंद आया और प्रकाश बोला, जी, मैं इस पौधे का पूरा ख्याल रखूँगा। पार्टी खत्म हो गयी और सभी लोग अपने अपने घर को चले गए और प्रकाश भी अपने पौधे को लेकर अपने कमरे में गया और सो गया।

अगली सुबह प्रकाश अपनी मम्मी से बोला कि मुझे पानी देना, मुझे अपने पौधे में पानी डालना है। यह सुनकर उसकी मम्मी बोली पानी क्यों पौधे में कोल्ड ड्रिंक डाल दे। क्योकिं तुझे कोल्ड ड्रिंक बहुत पसंद है। प्रकाश बोला माँ आप किस तरह की बात कर रही हो। पौधे में कोई कोल्ड ड्रिंक डालता है। उसकी माँ बोली जब तू कोल्ड ड्रिंक पी सकता है, तो यह तेरा पौधा क्यों नहीं पी सकता है। प्रकाश ने अपनी माँ के कहने पर पौधे में कोल्ड ड्रिंक डाल दिया।

अब प्रतिदिन ऐसे ही होने लगा। जब भी प्रकाश पौधे में पानी डालने के लिए बोलता माँ उससे कोल्ड ड्रिंक डालने के लिए कह देती थी। इस तरह से धीरे धीरे पौधा सूखता चला जा रहा था। प्रकाश को बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था, कि पौधा क्यों सूख रहा था। उसने पापा से कहा कि पापा मैं तो पौधे में पानी से भी अच्छी चीज कोल्ड ड्रिंक डालता हूँ फिर भी पौधा सूखता जा रहा है।

उसके पापा ने कहा कि लगता है, कि पौधे में खाद डालनी पड़ेगी। यह सुनकर प्रकाश बोला खाद कहाँ से मिलेगी पापा। उसके पापा ने कहा तुम्हारे पास ही तो है, जो चिप्स और बर्गर खाते हो, उसीको पौधे में डाल दो। यह सुनकर प्रकाश बोला क्या यह पौधे के लिए अच्छा होगा। उसके पापा ने कहा जब यह सब तुम्हे अच्छा लगता है, तो तुम्हारे पौधे को भी अच्छा लगेगा।

प्रकाश ने अपने पापा के कहने पर पौधे में चिप्स और बर्गर का चूरा डाल दिया। इससे उसका पौधा और भी ज्यादा सूखने लगा। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि उसका पौधा क्यों सूखता जा रहा है। तभी उसके मम्मी – पापा आ गए और उसकी मम्मी ने उसको समझाते हुए कहा कि तुम्हारा पौधा इसलिए सूख गया क्योंकि तुम इसमें पानी की जगह कोल्ड ड्रिंक डाल रहे थे और खाद की जगह चिप्स।

तुम्हें लगता है, कि यह सभी चीजे पानी से ज्यादा अच्छी है लेकिन इन्होंने पौधे को बहुत सुखा दिया है। इसी तरह से तुम भी यह सभी चीजे खाते हो। जिसकी वजह से तुम भी दिन प्रतिदिन अपने दोस्तों से खेल कूद में पीछे होते जा रहे हो। हालांकि यह सभी बाहर की चीजे खाने में बहुत अच्छी होती है। लेकिन इनमें किसी भी तरह का कोई पोषक तत्व नहीं होता है। अगर हम रोज रोज इस तरह की चीजे खाते है, तो इससे हमारा शरीर कमजोर होने लगता है। और हमारे शरीर में बहुत सी बीमारियां होने लगती है।

जिस तरह से पौधे को बढ़ने के लिए खाद और पानी की आवश्यकता होती है। ठीक उसी तरह से शरीर को मजबूत बनाने के लिए अच्छे पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। जो कि सिर्फ घर के खाने से ही मिलती है। यह बात प्रकाश समझ चुका था। प्रकाश बोला आज के बाद में कभी भी बाहर का कुछ नहीं खाऊंगा और हमेशा घर का खाना ही खाऊंगा। उस दिन के बाद प्रकाश घर का खाना खाता और अपने पौधे को पानी और खाद देता।

कुछ दिन बाद ही प्रकाश की सेहत भी अच्छी होने लगी और उसका पौधा भी फिर से लहरा उठा।

प्रसन्नता सद्भाव की छाया है;
वो सद्भाव का अनुसरण करती है, प्रसन्न रहने का और कोई तरीका नहीं है ।
– आचार्य रजनीश

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला

"निर्मल वर्मा", हिंदी के आधुनिक कथाकारों में एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार थे। शिमला में जन्में निर्मल वर्मा को मूर्तिदेवी पुरस्कार (1995), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1984) उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। परिंदे से प्रसिद्धि पाने वाले निर्मल वर्मा की कहानियां अभिव्यक्ति और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ समझी जाती हैं। ब्रिटिश भारत सरकार के रक्षा विभाग में एक उच्च पदाधिकारी श्री नंद कुमार वर्मा के घर जन्म लेने वाले आठ भाई बहनों में से पाँचवें निर्मल वर्मा की संवेदनात्मक बुनावट पर हिमाचल की पहाड़ी छायाएँ दूर तक पहचानी जा सकती हैं। हिन्दी कहानी में आधुनिक-बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का अग्रणी स्थान है। उन्होंने कम लिखा है परंतु जितना लिखा है उतने से ही वे बहुत ख्याति पाने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहानी की प्रचलित कला में तो संशोधन किया ही, प्रत्यक्ष यथार्थ को भेदकर उसके भीतर पहुँचने का भी प्रयत्न किया है। हिन्दी के महान साहित्यकारों में से अज्ञेय और निर्मल वर्मा जैसे कुछ ही साहित्यकार ऐसे रहे हैं जिन्होंने अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर भारतीय और पश्चिम की संस्कृतियों के अन्तर्द्वन्द पर गहनता एवं व्यापकता से विचार किया है।

इनका जन्म 3 अप्रैल 1929 को शिमला में हुआ था। दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कालेज से इतिहास में एम.ए. करने के बाद कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन किया। इन्हें वर्ष 1949 से 1972 तक यूरोप में प्रवास करने का अवसर मिला था और इस दौरान उन्होंने लगभग समूचे यूरोप की यात्रा करके वहाँ की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का नजदीक से परिचय प्राप्त किया था। 1949 से प्राग (चेकोस्लोवाकिया) के प्राच्य

निर्मल वर्मा
(3 अप्रैल 1929 -
25 अक्टूबर 2005)

विद्या संस्थान में सात वर्ष तक रहे। उसके बाद लंदन में रहते हुए टाइम्स ऑफ इंडिया के लिये सांस्कृतिक रिपोर्टिंग की। 1972 में स्वदेश लौटे। 1977 में आयोवा विश्व विद्यालय (अमरीका) के इंटरनेशनल राइटर्स प्रोग्राम में हिस्सेदारी की। उनकी कहानी "माया दर्पण" पर फिल्म बनी जिसे 1973 का सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज़ (शिमला) के फेलो रहे (1973) और मिथक-चेतना पर कार्य किया, निराला सृजनपीठ भोपाल (1981-1983) और यशपाल सृजनपीठ (शिमला) के अध्यक्ष रहे (1989)। 1988 में इंग्लैंड के प्रकाशक रीडर्स इंटरनेशनल द्वारा उनकी कहानियों का संग्रह द वर्ल्ड एल्सव्हेयर प्रकाशित हुई। इसी समय बीबीसी द्वारा उन पर डाक्यूमेंट्री फिल्म प्रसारित हुई थी। फेफड़े की बीमारी से जूझने के बाद 76 वर्ष की अवस्था में 25 अक्टूबर, 2005 को दिल्ली में उनका निधन हो गया।

अपनी गंभीर, भावपूर्ण और अवसाद से भरी कहानियों के लिए जाने-जाने वाले निर्मल वर्मा को आधुनिक हिंदी कहानी के सबसे प्रतिष्ठित नामों में गिना जाता रहा है, उनके लेखन की शैली सबसे अलग और पूरी तरह निजी थी। निर्मल वर्मा को भारत में साहित्य का शीर्ष सम्मान ज्ञानपीठ 1999 में दिया गया। 'रात का रिपोर्टर', 'एक चिथड़ा सुख', 'लाल टीन की छत' और 'वे दिन' उनके बहुचर्चित उपन्यास हैं। उनका अंतिम उपन्यास 1990 में प्रकाशित हुआ था--अंतिम अरण्य। उनकी एक सौ से अधिक कहानियाँ कई संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं जिनमें 'परिंदे', 'कौवे और काला पानी', 'बीच बहस में', 'जलती झाड़ी' आदि प्रमुख हैं। 'धुंध से उठती धुन' और 'चीड़ों पर चाँदनी' उनके यात्रा वृत्तांत हैं जिन्होंने लेखन की इस विधा को नए मायने दिए हैं। निर्मल वर्मा को सन 2002 में भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

यात्रा वृत्तांत

आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर बेंगलूरु की यात्रा

धीरज जुनेजा
अधिकारी
अबोहर शाखा

यदि दैनिक जीवन ने आपको थका हुआ छोड़ दिया है, तो अब समय है कि आप एक ब्रेक लें और अपने आंतरिक स्व से फिर से जुड़ने के लिए यात्रा पर जाएं। मैं भी अपनी रोज की एक जैसे जिंदगी से ऊब गया था और मैंने छुट्टियों में बेंगलूरु स्थित आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर में जाने का मन बनाया। बेंगलूरु में मेरा एक दोस्त विवेक रहता है। मैंने उसके पास जा कर रहने का प्रोग्राम बनाया।

मैं अपने शहर अबोहर से दिल्ली सुबह 6:20 ट्रेन से गया। दिल्ली में करीब 1:30 बजे पहुंचा। उसके बाद मैं दिल्ली से बेंगलूरु हवाई जहाज़ से गया। शाम को करीब 7:00 बजे मैं अपने दोस्त के घर पहुंचा। हमने रात को खाना खाया और बातें की। सुबह हम नहाकर और तैयार होकर बेंगलूरु स्थित आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर जाने के लिये घर से निकल पड़े। शहर से लगभग 28 किमी दूर एक सुंदर पहाड़ी के ऊपर स्थित यह शांतिपूर्ण आश्रम, योग, ध्यान और सांस लेने की तकनीक जैसे सुदर्शन क्रिया और प्राणायाम में कार्यक्रम प्रदान करता है। चाहे आप सेवा (या स्वैच्छिक कार्य) करना चाहते हों, या किसी एक कार्यक्रम में शामिल हों या बस एकांत के कुछ समय का आनंद लेना चाहते हों, यह आश्रम एकदम सही जगह है।

आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर की स्थापना 1986 में एक भारतीय आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर द्वारा की गई थी, उन्हें श्री श्री रविशंकर, गुरुदेव और गुरुजी जैसे सम्मानित नामों से भी जाना जाता है। तब से, केंद्र आध्यात्मिक आनंद पाने और योग और ध्यान में आवासीय कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए दुनिया भर से आगंतुकों को आकर्षित कर रहा है। इसे बेंगलूरु आश्रम भी कहा जाता है, यह आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के मुख्यालय के रूप में कार्य करता है, जो श्री श्री रविशंकर द्वारा स्थापित एक स्वयंसेवी-आधारित एनजीओ है। आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर लेआउट पंचगिरी पहाड़ियों पर शहर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और लगभग 250+ एकड़ भूमि में फैला हुआ है। परिसर कई संरचनाओं से युक्त है जिसमें खुली हवा में ध्यान कक्ष, उद्यान, एक वैदिक स्कूल, एक एम्फीथिएटर, आवासीय ब्लॉक, एक सभागार और प्रशासनिक भवन शामिल हैं। परिसर में भोजन सुविधाओं की एक अच्छी श्रृंखला, स्टोर, एक आयुर्वेदिक अस्पताल, एक स्वास्थ्य केंद्र और एक गोशाला भी है। परिसर में विभिन्न स्थानों और इमारतों के निर्माण में प्राकृतिक प्रकाश और कमल के प्रतीक का उपयोग किया जाता है। विशालाक्षी मंडप (ध्यान कक्ष) जैसी कुछ संरचनाएं आधुनिक और वैदिक वास्तुशिल्प तत्वों का एक असाधारण मिश्रण दिखलाई पड़ती है। आश्रम में पंचकर्म नामक स्वास्थ्य केंद्र पारंपरिक केरल शैली में बनाया गया है।

आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर, बेंगलूरु में कार्यक्रम और पाठ्यक्रम आश्रम, सभी आयु समूहों के लिए योग, स्वास्थ्य, ध्यान, श्वास तकनीक और कौशल विकास में आवासीय कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला आयोजित करता है।

यहाँ पर एक बस के द्वारा आप पूरे आश्रम में घूम सकते हैं। यह एक ऐसी बस यात्रा है जो आपको आश्रम परिसर की सभी आवश्यक यात्रा संरचनाओं के माध्यम से ले जाएगी ।

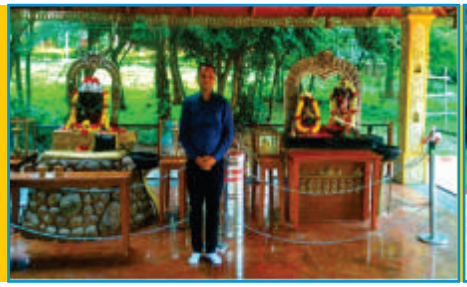

मैं और मेरा दोस्त आश्रम पहुंचकर बस द्वारा आश्रम के कई स्थान घूमें:

विशालाक्षी मंडप: आश्रम के केंद्र बिंदु के रूप में जाना जाता है, विशालाक्षी मंडप एक पांच-स्तरीय ध्यान कक्ष है जिसे श्री श्री रविशंकर द्वारा डिजाइन किया गया है और इसका नाम उनकी मां के नाम पर रखा गया है। यह आधुनिक और वैदिक वास्तुकला के मिश्रण को प्रदर्शित करता है और जटिल कलात्मकता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। संरचना के कांच के गुंबद में 15 फीट 3 इंच ऊंचा कलश है, जिसे महाद्वीप में सबसे बड़ा माना जाता है। भवन में कमल के डिजाइन तत्व शामिल हैं, जो हिंदू धर्म के सबसे पवित्र प्रतीकों में से एक है।

राधा कुंज गार्डन: यह विभिन्न विदेशी पौधों-फूलों से युक्त एक सुंदर और शांत उद्यान है। बगीचे में फुववारे, कमल के तालाब, एक मिट्टी का रास्ता, एक झील और एक झरना भी है।

श्री श्री गुरुकुल: प्राचीन भारत में प्रचलित शिक्षा गुरुकुल प्रणाली पर आधारित थी। श्री श्री गुरुकुल दुनिया भर के छात्रों को शिक्षित करता है। यह संस्कृत, वेद, ज्योतिष और वैदिक गणित सहित अन्य विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ उत्कृष्टता का केंद्र है।

श्री श्री गौशाला: देशी नस्लों की गायों के संरक्षण के लिए स्थापित, श्री श्री गौशाला लगभग 15 देशी नस्लों की सैकड़ों गायों का घर है। आगंतुक बस के माध्यम से एक निर्देशित भ्रमण कर सकते हैं और यहां की दैनिक गतिविधियों की एक झलक प्राप्त कर सकते हैं, जिसमें दुग्ध उत्पादन, चारा खिलाना, बायोगैस उत्पादन आदि शामिल हैं।

श्री श्री आयुर्वेद अस्पताल:

उन्नत नैदानिक सुविधाओं और उच्च प्रशिक्षित चिकित्सा पेशेवरों के साथ, श्री श्री कॉलेज ऑफ आयुर्वेदिक साइंस एंड रिसर्च हॉस्पिटल 100 से अधिक आयुर्वेदिक उपचार प्रदान करता है। अस्पताल में पारंपरिक उपकरणों के साथ-साथ आधुनिक सुविधाओं के साथ 15 पंचकर्म उपचार कक्ष भी हैं।

सुमेरु मंडप यह एक ओपन-एयर ऑडिटोरियम है जिसमें 12 जोड़े खंभे हैं, जो भारतीय ज्योतिष में 12 राशियों के प्रतीक हैं। पूरी संरचना अलंकृत कमल की पंखुड़ियों से घिरी हुई है, जो इसके स्थापत्य आकर्षण में वृद्धि करती है। आश्रम के उच्चतम बिंदु पर स्थित, मंडप पूरे परिसर और आसपास के इलाकों के शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है।

गुरु पादुका वनम: यह एक खुला अखाड़ा है जिसे वानम या वन की वैदिक अवधारणा के अनुरूप बनाया गया है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह उन लोगों को आश्रय प्रदान करता है जो अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर हैं। संरचना का आकार पादुका या गुरु के चरणों जैसा दिखता है। इसमें एक साथ हजारों लोग बैठ सकते हैं।

हमने उस दिन पूरा आश्रम देखा। आश्रम की यात्रा बेंगलूरु में पर्यटकों के लिए भी शीर्ष आकर्षणों में गिना जाता है। आप आश्रम की एक दिन की यात्रा की योजना बना सकते हैं और परिसर के भीतर के प्रमुख आकर्षणों को देखने के लिए बस यात्रा कर सकते हैं। सभी आर्ट ऑफ लिविंग आश्रमों की एक अनूठी विशेषता सत्संग है - एक दैनिक सभा जहां भक्त गाते हैं, ध्यान करते हैं और नृत्य करते हैं। बेंगलूरु आश्रम में सत्संग सत्र हर शाम होते हैं, इसलिए अपनी यात्रा की योजना उसी के अनुसार बनाएं।

और फिर हम आश्रम के पास क़े कुछ स्थानों को देखने के लिए निकल पड़े। हमने आश्रम के पास थोट्टिकल्लु जलप्रपात, तुराहल्ली आगरा झील, इस्कॉन मंदिर वैकुंटा हिल्स, बन्नेरघट्टा राष्ट्रीय उद्यान, श्री बनशंकरी अम्मा मंदिर स्थानों को घूमा। बेंगलूरु में कई पर्यटक आकर्षण आश्रम से 20 किमी से अधिक दूर है, लेकिन टैक्सियों या बीएमटीसी बसों का उपयोग करके सड़क मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है। यदि आप आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करने के बाद एक छोटी दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए तैयार हैं, तो यहां केवल 2 दिनों में सर्वश्रेष्ठ बेंगलूरु को कवर करने के लिए एक यात्रा कार्यक्रम है। मैं बेंगलूरु में तीन दिन तक रहा और एक अद्भुत अनुभव के साथ वापसी की तरफ चल पड़ा ।

आलेख

समय चक्र

इकबाल लतीफ़
प्रबंधक (विपणन)
क्षेत्रीय कार्यालय, दक्षिण दिल्ली

यह घटना मेरे जीवन की यादगार लम्हों में से एक है। यह घटना जनवरी सन 2009 की है जब मैं उस वक्त रिलायंस लाइफ इंश्योरेंस में सेल्स मैनेजर था।

मुझे रिलायंस कंपनी में काफी तनाव था जीवन बीमा बेचने के लिए मैंने अपने एक दोस्त श्री नकुल हेमब्रम के बड़े भाई को 50,000 रुपाय वार्षिक किस्त की पॉलिसी दे दी।

हालांकि वो पॉलिसी लेने को तैयार नहीं थे फिर भी किसी तरह मैंने उनको पॉलिसी के लिए राजी कर लिया। उनकी आमदनी का स्रोत कुछ खास नहीं था। उनकी एक छोटी सी दुकान थी और दूसरा स्रोत खेती ही थी।

मुझे अच्छे से याद है नकुल हेमब्रम के बड़े भाई की उम्र उस वक्त 35 वर्ष की थी। उनकी शादी को दो साल ही हुए थे और उनकी एक साल की एक बेटी भी थी।

पॉलिसी देने के बाद मेरी उनसे काफी समय तक बात-चीत ही नहीं हुई क्योकि उनका घर झारखंड के पश्चिम सिंहभूम के गोइलकेरा गाँव में था जो कि घने जगलों के बीच में था और मेरी पोस्टिंग चक्रधरपुर में थी जो उनके गाँव से लगभग 45 किलोमीटर दूर था।

करीब 4-5 महीने के बाद एक दिन मैंने अपने मित्र को फोन किया। तब मैं बुरी तरह से चौक गया और तब उसने बताया कि उसके भाई की मुत्यु हो चुकी है। मैंने उससे पूछा कि यह सब कैसे हुआ। उसने बताया कि जब वह खेतों में काम कर रहे थे तभी खेत में काम करते समय उन्हे एक जहरीले सांप ने काट लिया था और इलाज के लिए उन्हे गाँव से शहर ले जाते समय रास्ते में ही उनकी मौत हो गई थी। उनके परिवार पर करीब 4 लाख का कर्ज है और भाई की एक छोटी एक साल की बेटी भी है।

जब मैं उनके घर गया तब मैंने उनकी पत्नी से पूछा कि क्या आपको पता है कि उनका 10 लाख रुपाय का बीमा है। उनका जबाव था कि क्या बीमा की रकम 10 लाख रुपाय उनको मिल सकते हैं।

मैं दूसरे दिन उनके गाँव गया और सब कुछ उनकी पत्नी को बताया। उनके मन में एक बहुत बड़ी उम्मीद जाग उठी। उसके बाद मैं और मेरे मित्र ने काफी भाग-दौड़ की और करीब 45 दिनों के बाद उनकी पत्नी को 10 लाख रुपाय कंपनी से मिल गए। जिस दिन हम लोग 10 लाख रुपाय का चेक देने के लिए उनके घर गए उस दिन वे लोग मुझे एक फरिश्ते के जैसा देख रहे थे। उस वक्त 10 लाख रुपाय की अहमियत बहुत अधिक थी।

मित्र के भाई की पत्नी के आखों में आँसू थे। वो मेरे पैर छूना चाहती थी और उसकी बच्ची मेरी गोद में थी। उनकी पत्नी एक बात बार-बार कह रही थी कि इकबाल भैया आपने इस घर को टूटने से बचा लिया, हमारी बेटी को आपने एक नई उम्मीद दे दी। उस वक्त मैं बहुत भावुक हो गया था और बहुत सारे लोग वहाँ जमा थे।

आखिरी बार मैं उनके घर करीब 5 साल पहले गया था, उनके घर मुझे बहुत इज्जत मिली थी और अब उनकी बेटी काफी बड़ी हो चुकी थी। वो लोग अपनी बच्ची की पढ़ाई के लिए रांची जाने वाले थे।

आने वाले समय में उनकी बच्ची कुछ बन जाए तो
मैं एक विजेता बन जाऊंगा।

कविता

लड़ाई अपने अंतर्द्वंद से

शिवानी कुमारी
अधिकारी
अंचल कार्यालय, जयपुर

चाल चल दी है मैंने उछाल आना बाकी है
आग लगाई है बस उबाल आना बाकी है
कौन कहता है कि सपने पूरे नहीं होते
प्रयास कर लो तुम अपने परिणाम आना बाकी है

एक सीढ़ी चल लो तुम उछाल आना बाकी है
शुरुआत की चिंगारी तो दो अंजाम आना बाकी है
आरंभ क्या और अंत क्या, कर प्रयास तू निरंतर
ऊंचाई और गहराई का समझ आएगा तभी अंतर

कभी ऊपर कभी नीचे ये जिंदगी का ग्राफ है
कर शुरू तो एक बार, की ही एक जज्बात है
कर शुरू पंक्ति पहली शीर्षक आना अभी बाकी है
चाल चल दी है मैंने उछाल आना बाकी है

सोच मत तू कर दे बस लड़ ले तू अंतर्द्वंद से
खुद भी न तू समझ पाएगा कि क्या तेरी औकात है
की किसी परिणाम के लिए करो बस शुरुआत ही
आगे मंजिल खुद मिलेगी भर अपनी पहली उड़ान

पहला कदम ही बताता है आपके लक्ष्य को
आप ही तो हो दवा अपने हर मर्ज का
है डॉक्टर है शिक्षक भी तू अपने हर मर्ज का
कर तो ले एक बार बस शुरुआत इस फर्ज का

हर फर्ज और कर्ज अपनी हर मर्ज का
हर बार मिलेगी तुझे ये दवा तेरे खुद से ही
कोई ना शिक्षक ना गुरु की खुद ही कर अपना शुरू
तुझको कोई ना समझ पाएगा खुद से ज्यादा तुझे

जो तू है तू बस वो समझ झांक के देख अपने अंदर
जैसे नदियों की धारा बहती यू निरंतर
तेरा हर प्रयास ही देगा तुझे सफलता का मंत्र
है इंसान एक ही सब बस प्रयास करता है अलग

क्यूं कोई बनता है गांधी कोई नेहरु भी
करते हैं बस अपनी लड़ाई विजयी तो बनाता संसार ही
है ये संसार बहुत छोटी तेरे आगे
कि जो करते हैं आगाज अंजाम पर पहुंचते वही

ना घबरा ना तू रुक कि सब होंगे एक दिन मौन भी
तोड़ के सारे बंधन को कर दो खुद को मुक्त भी
बढ़ कहीं तो चल कहीं कि अंजाम आना बाकी है
जब बढ़ेगा आगे तू मिल लेगा खुद के शीर्ष से

है चकित तू देख कर खुद को कि है अचंभित
क्या ये मैं हूं? पा लिया जिसने अपना अनगिनत!

दूसरों की छाव में खड़े होकर हम अपनी परछाई खो देते है, लेकिन अपनी परछाई बनाने के लिए हमें खुद धूप में खड़ा होना पड़ेगा।

चरित्र एक वृक्ष है और प्रतिष्ठा, यश, सम्मान उसकी छाया है, लेकिन विडंबना यह है कि वृक्ष का ध्यान बहुत कम लोग रखते हैं और छाया सबको चाहिए।

यदि आप कुछ ऐसा पाना चाहते हैं जो आपके पास कभी नहीं था, तो उसके लिए आपको वो करने के लिए तैयार रहना होगा जो आपने कभी नहीं किया हो।

दिनांक 19.11.2022 को आयोजित प्रधान कार्यालय की 186वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान **केनरा ज्योति** के 33वें संस्करण का विमोचन करते हुए श्री एल. वी. प्रभाकर, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अन्य शीर्ष कार्यपालकगण।

दिनांक 27.12.2022 को आयोजित नराकास (बैंक एवं बीमा) बेंगलूरु की 74वीं अर्द्धवार्षिक बैठक एवं संयुक्त हिंदी दिवस समारोह के दौरान अंतर बैंक प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एल.वी. प्रभाकर साथ में, कार्यपालक निदेशक, श्री देवाशीष मुखर्जी, सहायक निदेशक(का.) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय दक्षिण, श्री नरेंद्र सिंह मेहरा उपस्थित हैं।

दिनांक 27.01.2023 को त्रिवेंद्रम में आयोजित दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के लिए संयुक्त **क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-2023** में नराकास बेंगलूरु के लिए पुरस्कार ग्रहण करते हुए केनरा बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री देवाशीष मुखर्जी एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ई. रमेश।

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम
Canara Bank
A Government of India Undertaking
Together We Can
केनरा ai1 बैंकिंग सुपर ऐप
75 आज़ादी का अमृत महोत्सव
G20 भारत 2023
गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
जय हिंद।
74 वां गणतंत्र दिवस
7.75%*
प्रति वर्ष
विशिष्ट जमा
400
दिन
ऑनलाइन आवेदन करें
हमारी सर्वोत्तम ब्याज दर
अपनी नजदीकी शाखा से संपर्क करें
नियम व शर्तें लागू
*वरिष्ठ नागरिकों के लिए: • गैर प्रतिदेय > ₹15 लाख @ 7.75% प्रति वर्ष
• प्रतिदेय @ 7.65% प्रति वर्ष • ₹25,000 और उससे अधिक व ₹2 करोड़ से कम की राशि के लिए
ai1 ऐप डाउनलोड करने के लिए
इस क्यूआर कोड को स्कैन करें
और जमा खाता खोलें
canarabank
canarabankofficial
canarabankinsta
कॉल केनरा 1800 425 0018
www.canarabank.com